Retail Price ₹ 20

जनवरी 2025

# दादावाणी

खुद विषय में निडरता रखे तो रहेगी। वह अहंकार करने लगे कि, 'मैं विषय में जीत गया, अब कोई हर्ज नहीं है!' उसे निडरता कहते हैं। यदि वह निडर रहा तो वह विष हो गया। इस विषय में तो आखिर तक निडर नहीं होना है।

## अडालज : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 23-24 नवम्बर 2024

## पालनपुर : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 27-28 नवम्बर 2024

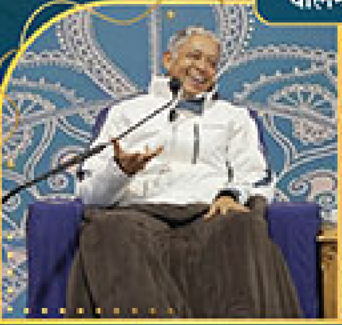

## अंबाजी : DMHT शिविर : ता. 29 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2024

ब्रह्मचारी

नाटक

सत्संग

ज्ञानविधि

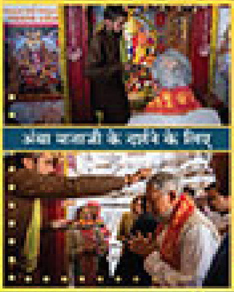

अंबा माताजी के दर्शन के लिए

अंबाजी मंदिर में प्रार्थना विधि

गरबा

वर्ष : 20 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 231
**जनवरी 2025**
**पृष्ठ - 28**

# दादावाणी

## विषय नहीं, परंतु निडरता वह विष है

### संपादकीय

इस दुषमकाल के महा मोहनीय जगत् में जहाँ वातावरण ही विकराल विषयाग्नि का फैल रहा है, ऐसे संयोगों में परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने अक्रम विज्ञान के साथ 'ब्रह्मचर्य' संबंधी अद्‌भुत विज्ञान जगत् को दिया है। उसे जैसा है वैसा ज्ञानी की दृष्टि से समझेंगे तो पार उतर जाएँगे, परंतु यदि यथार्थ रूप से नहीं समझ पाए तो उसका दुरुपयोग हो जाएगा, जैसे कि 'विषय तो स्थूल है और आत्मा सूक्ष्मतम है, वह स्थूल को कैसे भोग सकता है? मोक्ष जाने में विषय कहीं बाधक नहीं है'। 'ज्ञानी पुरुष' के इन वैज्ञानिक वाक्यों का, खुद के सूक्ष्मतम स्वरूप में ही निरंतर अनुभवपूर्वक रहने की दशा तक पहुँचे बिना उपयोग करें तो सोने की कटार अपने ही पेट में भौंकने जैसी दशा हो जाएगी!

विषय के दोष उत्पन्न होते हैं, तब कई बार सूक्ष्म में ज्ञान का दुरुपयोग हो जाता है, जैसे कि कर्म के उदय भारी हैं इसलिए फिसल जाते हैं! विषय में फिसलना, वह जोख़िम है परंतु व्यवस्थित के सामने अपनी सत्ता कितनी? अक्रम में विषय डिस्चार्ज स्वरूप है, ऐसा करके पोल चलाते हैं! नीयत चोर तो नहीं है न? ज्ञान के दुरुपयोग से जैसा अभिप्राय बरतता है, वैसा अगले जन्म का बीज डलता है, जो जन्मोंजन्म भ्रमण का कारण बन जाता है।

विषयबीज निर्मूलन के यथार्थ मार्ग पर चल सकें, उसके लिए स्थूल में ब्रह्मचर्य में सहायक हो ऐसा मन का विकास, उत्तेजना न हो ऐसा भोजन, ब्रह्मचारियों का संगबल, सूक्ष्म में विषय के ज़ोखिमों पर विचारणा आवश्यक है। विषय के विचार उत्पन्न होते ही तत्क्षण ही प्रतिक्रमण-सामायिक में दोष को समझ से जड़मूल से उखाड़ने की प्रक्रियाएँ चलती रहनी चाहिए।

'विषय विष नहीं है, विषय में निडरता, वह विष है। अत: विषय से डरो।' अपना मार्ग साहजिक है, बाकी सबकुछ चलाया जा सकता है लेकिन विषय के लिए साहजिक नहीं है। अक्रम विज्ञान सभी तरह से निर्भय करने वाला है परंतु विषय में निडर नहीं होना है। दादाश्री विषय में निडर रहने के लिए थर्मामीटर देते हुए कहते हैं कि यदि साँप के सामने तू निडर रह सकता है तो विषय में निडर रहना और वहाँ पर यदि डरकर पैर ऊपर कर लेता हो तो विषय से भी डरते रहना।

दादाश्री कहते हैं कि यह ज्ञान ऐसा है कि एकावतारी बनाए, परंतु इसमें सतर्क रहना चाहिए। मन में ज़रा भी दगा नहीं होना चाहिए। विषय का संयोग हो तो उनकी दृष्टि सख़्त हो जाती है। यहाँ अपवित्रता नहीं चलेगी, यहाँ पवित्र पुरुषों का ही काम है। पुण्य हों तभी ब्रह्मचर्य व्रत रहता है, साथ ही ज्ञानी की तरफ से पूरा बल और शक्तियाँ मिलते हैं, परंतु पुण्य बदल जाए तब पुरुषार्थ की ज़रूरत है। अत: यथार्थ ब्रह्मचर्य पालन करने के लिए खुद की दृढ़ प्रतिज्ञा, झंझट-लालच रहित निश्चय और साफ नीयत सहित पवित्र ब्रह्मचर्यपूर्वक का जीवन जीने का पुरुषार्थ शुरू कर सकें, ऐसी अभ्यर्थना।

**जय सच्चिदानंद**

**Editor : Dimple Mehta**
© 2025
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Printed at**
**Amba Multiprint**
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

**Published at**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन:** 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए: +91 8155007500

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**5 साल**
भारत : 1000 रुपये
**वार्षिक**
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# विषय नहीं, परंतु निडरता वह विष है

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

## ( सूत्र-1 )

**ब्रह्मचर्य के लिए हमारी तरफ से आपके लिए पूरा बल है, आपकी प्रतिज्ञा मज़बूत, सुंदर होनी चाहिए। आपकी प्रतिज्ञा जोड़तोड़ रहित, लालच रहित और दुश्मनी रहित होनी चाहिए।**

जिसे ब्रह्मचर्य के विचार आते हों, वह प्रभावशाली कहलाता है! देवता ही कहलाता है! और जिसे अब्रह्मचर्य के विचार आते हों, तो वह साधारण मनुष्य ही माना जाएगा न! पशु से लेकर आम मनुष्य तक के सभी लोगों को अब्रह्मचर्य के विचार आते हैं। अब्रह्मचर्य के विचार, वह खुली पाशवता है। जिनमें समझदारी नहीं हैं, वे अब्रह्मचर्य में पड़ते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** हम विषय में फिसलें उसमें जोख़िम तो है, लेकिन उसमें हमारी सत्ता कितनी? यदि हमें नहीं करना हो, तो उसमें हमारी सत्ता कितनी है?

**दादाश्री :** पूरी सत्ता है। 'एक्सिडेन्ट' तो कभी-कभार ही होता है, रोज़ नही होता। अतः रोज़ाना जो करते हो, वह खुद की 'विल पावर' से होता है। बाकी 'एक्सिडेन्ट' तो छः-बारह महीने में एकाध बार होता है और उसे 'व्यवस्थित' कहते हैं। प्रतिदिन 'एक्सिडेन्ट' हो उसे यदि 'व्यवस्थित' कहोगे तो वह 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग हुआ कहा जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह किस तरह 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग हुआ कहा जाएगा?

**दादाश्री :** उसका दुरुपयोग हो ही जाता है, उल्टी मान्यता मानी इसलिए। उसमें भी आपको छूट दी जाती है कि विचार आएँ और आपकी दृष्टि मलिन हो जाए तो उसमें हर्ज नहीं है; उसे धो डालना और हमारी पाँच आज्ञा का पालन होते रहना चाहिए। यह तो पाँच आज्ञा का पालन नहीं हो पाता, इसलिए मुझे दूसरी ओर का स्क्रू टाइट करना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, वहाँ भी आज्ञा पालन तो होता है, अलग रहा जाता है।

**दादाश्री :** वह आज्ञा नहीं कहलाती। वह तो एक प्रकार का लालच घुस गया है, उससे लालची हो जाता है फिर।

इस लड़के ने अपने दोष का प्रतिक्रमण किया था, बाद में मैंने उसे आज्ञा दी, उसके बाद उससे एक भी दोष नहीं होता क्योंकि उसने तय किया है कि मुझे अब उस ओर दृष्टि ही नहीं करनी है, मुझे बिगड़ना ही नहीं है, मुझे विषय के विचार ही नहीं करने हैं और मैंने उसे आज्ञा दी। अब उसका कुछ भी नहीं बिगड़ रहा है। अरे, निरंतर समाधि में रहता है! आपकी नीयत खराब हो, तभी सबकुछ बिगड़ता है। एक बात में तो स्ट्रोंग रहना ही पड़ेगा न?

विषय का स्वभाव क्या है? जितना स्ट्रोंग उतना विषय कम। इसमें जितना कमज़ोर, उतने विषय बढ़ेंगे। जो बिल्कुल कमज़ोर होता है, उसमें बहुत विषय होते हैं। इसलिए कमज़ोर को फिर

(इसमें से) बाहर निकलने ही न दें, इतने सारे विषय चिपके होते हैं जबकि मज़बूत को छू ही नहीं सकते।

**प्रश्नकर्ता :** वह कमज़ोरी किस आधार पर टिकी हुई है?

**दादाश्री :** खुद की उसमें प्रतिज्ञा नहीं होती, खुद की कभी भी स्थिरता नहीं होती इसलिए वह फिसलता जाता है। फिसलते फिसलते खत्म हो जाता है। इसलिए निश्चय मज़बूत रखना, अत्यंत मज़बूत निश्चय होना चाहिए। निश्चय होगा न तो कुछ भी नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी खुद का निश्चय पक्का है। अब बाद में जो होता है, वह तो पूरा उदय का भाग आया न?

**दादाश्री :** उदय का भाग कौन सा कहलाता है कि संडास नहीं जाना है, ऐसा कहता है तो। यहाँ घर में तो संडास नहीं कर सकते न! इसलिए संडास को देर तक रोककर रखता है और बाद में जाता है, वह उदय भाग कहलाता है। कहीं पर भी संडास करने बैठ जाए, उसे उदय भाग नहीं कहा जा सकता। इस विषय में क्या होता है कि वह रस अच्छा लगता है, यह पुरानी आदत है। चखने की आदत है, इसलिए वह फिर उदय भाग में हस्तक्षेप करने जाता है। उदय भाग तो, खुद बिल्कुल मना करता हो और अंत तक स्ट्रोंग, मुझे फिसलना नहीं है, ऐसा कहता है। फिर फिसल जाए, वह बात अलग है। फिसलने वाला व्यक्ति कितनी सावधानी रखता है? सावधानीपूर्वक रहना, तो हर्ज नहीं हैं।

कुएँ में गिरना ही नहीं है ऐसा निश्चय है, उसे चार दिन से सोया नहीं हो और कुएँ की दीवार पर बैठा दिया जाए, फिर भी नहीं सोएगा वहाँ।

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ तो प्रत्यक्ष दिखता है न कि गिर जाऊँगा यहाँ।

**दादाश्री :** हाँ, तो ऐसे प्रत्यक्ष दिखाई दे उससे भी बुरा है यह तो। यह तो कितनी बड़ी खाई है! अनंत जन्मों का जंजाल लिपट जाता है! अर्थात् मन मज़बूत हुआ हो तो होगा, वर्ना यों तो नहीं हो पाएगा। यों कच्चे मन से ऐसे, ये धागे सिलाई के लिए नहीं हैं। कैसा स्ट्रोंग होना चाहिए कि मर जाऊँगा लेकिन छूटेगा नहीं।

## (सूत्र-2)

**ब्रह्मचर्य में अपवाद रखा जाए, वह ऐसी चीज़ नहीं है क्योंकि मनुष्य का मन पोल (दूसरा उल्टा रास्ता) ढूँढता है। किसी जगह पर अगर इतना सा भी छेद हो तो मन उसे बड़ा कर देता है! मन का स्वभाव ही इस तरह से पोल ढूँढने का है।**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यह ब्रह्मचर्य, वह कोई खाने का खेल नहीं है।

**दादाश्री :** ब्रह्मचर्य, यह कोई खाने का खेल नहीं है, तो अब्रह्मचर्य भी खाने का खेल नहीं है। अब्रह्मचर्य की जो पीड़ा है न, ब्रह्मचर्य में उसके बजाय बहुत कम पीड़ा है। ब्रह्मचर्य में एक ही प्रकार की पीड़ा है कि उस विषय की ओर ध्यान ही नहीं देना है।

**प्रश्नकर्ता :** किसी का ब्रह्मचर्य का निश्चय डगमगाए, वह उसकी पहले की भावना ऐसी होगी, इसलिए?

**दादाश्री :** नहीं, ऐसा नहीं, यह निश्चय है ही नहीं उसका। यह पहले का प्रोजेक्ट नहीं है और यह जो निश्चय किया है, वह लोगों का देखकर किया है। यह सिर्फ देखा-देखी है, इसलिए डगमगाता रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** ब्रह्मचर्य व्रत लेने के बाद किसी का डगमगा रहा हो तो?

**दादाश्री :** डगमगाने वाले से व्रत लिया ही

नहीं जा सकता और व्रत ले तो उसमें बरकत आएगी भी नहीं। डगमगाए तो हम नहीं समझ जाएँगे कि 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देर शैडोज़ बिफोर?'

ब्रह्मचर्य में अपवाद रखा जाए, वह ऐसी चीज़ नहीं है क्योंकि मनुष्य का मन पोल (दूसरा उल्टा रास्ता) ढूँढता है। किसी जगह पर अगर इतना सा भी छेद हो तो मन उसे बड़ा कर देता है!

**प्रश्नकर्ता :** यह जो पोल ढूँढ निकालता है, उसमें कौन सी वृत्ति काम करती है?

**दादाश्री :** मन ही वह काम करता है, वृत्ति नहीं। मन का स्वभाव ही है, इस तरह से पोल ढूँढने का।

**प्रश्नकर्ता :** मन पोल मार रहा हो तो उसे कैसे रोकें?

**दादाश्री :** निश्चय से। निश्चय होगा तो फिर वह पोल मारेगा ही कैसे? अपना निश्चय है, तो कोई पोल मारेगा ही नहीं न! जिसे ऐसा निश्चय है कि 'मांसाहार नहीं करना है', वह खाता ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या हर एक बात में निश्चय करके रखना है?

**दादाश्री :** निश्चय से ही सारा काम होता है।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा प्राप्त करने के बाद क्या निश्चयबल रखना पड़ता है?

**दादाश्री :** खुद को रखना ही नहीं है न? आपको तो 'चंदूभाई' से कहना है कि आप ठीक से निश्चय रखो। ज्ञान से किए हुए निश्चय तो बहुत सुंदर होते हैं। वह तो बहुत अलग चीज़ है। मन के साथ कैसे व्यवहार करना, वह सारी समझ तो होती ही है। उसे पूछने नहीं जाना पड़ता कि मुझे क्या करना चाहिए? ज्ञान से किया हुआ निश्चय, उसकी तो बात ही अलग है न!

**प्रश्नकर्ता :** कैसा निश्चय करना चाहिए?

**दादाश्री :** हमने जो निश्चय किया हो, उसी तरफ जा सकते हैं। आत्मा अनंत शक्ति स्वरूप है, वह शक्ति प्रकट हो जाएगी। आत्मा वह निश्चय स्वरूप है और आपको निश्चय करने की ज़रूरत है। डगमग डगमग नहीं चलेगा! एक ही स्ट्रोंग अभिप्राय ज़िंदगी भर त्याग करवाता है! अभिप्राय थोड़ा कच्चा रह जाए तो क्या होगा? जब कर्म के उदय आएँगे तो फिर मनुष्य का कुछ भी नहीं चलेगा, फिर वह स्लिप हो जाएगा। अरे, शादी तक कर लेगा! 'वे अभिप्राय पक्के नहीं हैं'।

## (सूत्र-3)

**विषय से संबंधित अभिप्राय ही विषयों से संबंधित प्रवर्तने वाले अज्ञान का मुख्य एविडेन्स है।**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन मानसशास्त्री कहते हैं कि विषय बंद हो ही नहीं सकता, अंत तक रहता है। तो फिर वीर्य का ऊर्ध्वगमन होगा ही नहीं न?

**दादाश्री :** मैं क्या कहता हूँ कि विषय के प्रति अभिप्राय बदल जाए तो फिर विषय रहेगा ही नहीं! जब तक अभिप्राय नहीं बदलेगा, तब तक वीर्य का ऊर्ध्वगमन होगा ही नहीं। अपने यहाँ तो (अभिप्राय) सीधा आत्मा में ही डाल देना है, उसे ही ऊर्ध्वगमन कहते हैं! विषय बंद करने से उसे आत्मा का सुख बर्तता है और विषय बंद हो जाए तो वीर्य का ऊर्ध्वगमन होता ही है। हमारी आज्ञा ही ऐसी है कि विषय बंद हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** आज्ञा में क्या होता है? स्थूल बंद करना?

**दादाश्री :** स्थूल के लिए हम कुछ कहते ही नहीं। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार ब्रह्मचर्य में रहें, ऐसा होना चाहिए और यदि मन-बुद्धि-चित्त

और अहंकार ब्रह्मचर्य के पक्ष में आ गए तो स्थूल (ब्रह्मचर्य) तो अपने आप आ ही जाएगा। तेरे मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को पलट। हमारी आज्ञा ऐसी है कि ये चारों पलट ही जाते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** (विषय के) गाढ़ अभिप्राय कैसे निकालें?

**दादाश्री :** जब से निश्चित किया कि निकालने हैं, तब से वे निकलने लगेंगे। यह विषय तो सब से खराब चीज़ है, ऐसा निरंतर अभिप्राय रहेगा तो आपका आज का गुनाह थोड़ा-बहुत चौदह आने जितना माफ हो जाएगा लेकिन जिसे ऐसा अभिप्राय बरतता है कि विषय में कोई हर्ज नहीं है तो वह बेचारा तो मारा ही गया! क्यों मारा जाएगा कि उसे अभी भी अभिप्राय है कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। उस अभिप्राय का रहना, वह भयंकर गुनाह है। विषय का अभिप्राय बहुत मार खिलाता है। अभी तक उसके लिए अभिप्राय है और उस अभिप्राय से 'जैसा है वैसा' आरपार नहीं देख पाते, मुक्त आनंद का अनुभव नहीं हो पाता क्योंकि अभिप्राय का आवरण बाधा डालता है।

अभी अंदर उसे ऐसा अभिप्राय रहता है कि 'इसमें सुख है'। यह तो खुद ही वकील, खुद ही जज और खुद ही आरोपी इसलिए फिर जजमेन्ट अपनी ओर खींच ले जाता है। हम अभिप्राय-ब्रह्मचर्य को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

ये ब्रह्मचारी लड़के मुझसे कह जाते हैं कि अभी भी हमें तो अंदर ऐसे खराब विचार आते हैं और ऐसा सब होता हैं। तब मैंने कहा कि इसके लिए प्रतिक्रमण करना, लेकिन इसके लिए बहुत बैचेन मत होना। भगवान क्या कहते हैं कि 'तुम्हें क्या पसंद है?' तब कहते हैं कि 'ब्रह्मचर्य।' इसलिए अब तुम ब्रह्मचर्य विभाग में बैठे हो। लेकिन बाद में ब्रह्मचर्य का अभिप्राय बदल नहीं जाना चाहिए। यानी ब्रह्मचर्य के विरुद्ध होने के विचार आएँ, वहाँ तक मत पहुँचना। इसलिए उन विचारों पर कंट्रोल रखना। अतः मुख्यतः तो तुम्हारा अभिप्राय नहीं बदलना चाहिए। मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह आपकी समझ में आया न? अभिप्राय तो ब्रह्मचर्य का ही रखना चाहिए। जैसा अभिप्राय बरतता है, वैसा अगले जन्म के लिए बीज डलता है, उसी से चार्ज होता है।

## (सूत्र-4)

**बीज किसे कहते हैं? अन्य संयोग मिल जाएँ, तब पड़ा हुआ बीज उग निकलता है। जब तक बीज के रूप में है, तब तक उपाय है, बाद में कुछ नहीं हो सकता। तभी तो विषय के लिए हम यहाँ बहुत सख्ती रखते हैं न! अन्य सबकुछ चलाया जा सकता है, लेकिन विषय नहीं चलाया जा सकता।**

*''विषयरूप अंकुरथी, टले ज्ञान अने ध्यान,*
*लेश मदिरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान''*

**- श्रीमद् राजचंद**

**प्रश्नकर्ता :** '*विषयरूप अंकुरथी....*' यानी?

**दादाश्री :** अंकुर यानी अंदर बीज हो और उसका विचार आते ही उसमें तन्मयाकार हो जाए तो वह अंकुर कहलाता है। वह अंकुर फूटा कि गया... इसलिए हम तय करते हैं न कि विचार आने से पहले खींचकर बाहर फेंक देना। वह अंकुर फूटा कि फिर ज्ञान और ध्यान सबकुछ टूट जाता है, खत्म हो जाता है।

यह विषय-विकार ऐसा है कि जिसे एक सेकन्ड के लिए भी, ज़रा सा भी नहीं रहने देना चाहिए, वर्ना पेड़ बनते देर नहीं लगेगी। यह पौधा उगने लगे तभी से समझ जाना कि यह पौधा काँटेदार है। इसलिए उसे उगते ही उखाड़कर फेंक देना। वर्ना

चिपक जाएगा तो उसके काँटों से पूरे शरीर पर जलन होगी। अनादिकाल का अभ्यास है, इसलिए मन वापस यही चिंतवन करता रहता है। उससे वापस विषय का पौधा उगता है। मूंग में पानी डालें तो उग जाता है, वह नीचे जड़ डालेगा। तभी से हम समझ जाते हैं कि यह तो पौधा बनेगा। उसी तरह इसमें विचार आते ही उसे उखाड़कर फेंक देना। सिर्फ यह विषय ही ऐसा है कि छोटा सा पौधा बनने के बाद फिर वह जाता नहीं है। इसीलिए उसे जड़ से ही उखाड़कर खींच निकालना चाहिए।

बीज किसे कहते हैं? जब अन्य संयोग मिल जाएँ, तब अगर बीज पड़े तो वह उग निकलता है, तो उगते ही उसे उखाड़ देना चाहिए। इन बीजों का स्वभाव कैसा है कि गिरते ही रहते हैं। आँखें तो तरह तरह का देखती हैं, उससे अंदर बीज गिरते हैं तो फिर उन्हें उखाड़ देना चाहिए। बाकी इसमें तो आदी हो जाता है। ज़रा भी ढीला छोड़ा कि वहाँ आदी हो जाता है। इसलिए ढीला मत छोड़ना, मज़बूत रहना। मर जाऊँ फिर भी यह नहीं चाहिए, इतना मज़बूत रहना चाहिए।

जब तक बीज के रूप में है, तब तक उपाय है, बाद में कुछ नहीं हो सकता। बीज में से बीज डलता है, बीज में से बीज डलता है, बीज में से बीज डलता है और वह सेंकना नहीं जानता न! किससे सेंका जाए, ऐसा जानता नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** जब तक सेंकना नहीं जानता, तब तक चलता ही रहेगा?

**दादाश्री :** हाँ, बस, बीज पड़ते ही रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यानी बीज को सेंकना आना चाहिए, लेकिन उसे कैसे सेंकना है?

**दादाश्री :** वह तो अपने इस प्रतिक्रमण से, आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान से। निरंतर प्रतिक्रमण करते रहने पड़ेंगे। आपको तो समझ में आए कि अंदर यह बीज पड़ा हुआ है, अतः यह तो बड़ा जोख़िम है। यह विषय तो बहुत जोख़िम वाली चीज़ है। जहाँ-जहाँ सामने वाला व्यक्ति जाए, वहाँ आपको जाना पड़ेगा। फिर सामने वाला व्यक्ति आपका बेटा बनकर आएगा। यानी ऐसे सारे जोख़िम खड़े हो जाते हैं। मन में विषय का विचार आया कि तुरंत उसे उखाड़ देना चाहिए और कहीं आकर्षण हुआ कि उसका तुरंत ही प्रतिक्रमण करना चाहिए। इन दो शब्दों को पकड़ ले, उसे ब्रह्मचर्य हमेशा रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** आपके ज्ञान के बाद हम इसी जन्म में विषय बीज से एकदम निर्ग्रंथ हो सकते हैं?

**दादाश्री :** सबकुछ हो सकता है। अगले जन्म के लिए बीज नहीं डलेंगे। ये पुराने बीज हों, उन्हें आप धो देना, नए बीज नहीं डलेंगे।

**प्रश्नकर्ता :** आपने ऐसा भी कहा था कि कुछ चारित्रमोह ऐसे प्रकार के भी होते है कि ज्ञान को भी उड़ा दें, तो वह किस प्रकार का चारित्रमोह है?

**दादाश्री :** वह विषय में से खड़ा होने वाला चारित्रमोह है। वह फिर ज्ञान को और सबको उड़ा देता है। इसलिए अभी तक विषय से ही यह सब रुका हुआ है। मूल विषय है और उसमें से इस लक्ष्मी पर राग हुआ, और उसका अहंकार है। अतः यदि मूल विषय चला जाए, तो सब चला जाएगा।

## ( सूत्र-5 )

**अपना मार्ग हर तरह से साहजिक है, लेकिन विषय के बारे में साहजिक नहीं है। सिर्फ विषय ही ऐसा है कि अहंकार करके भी छूट जाना चाहिए, वर्ना यह विषय तो मार ही डालेगा! भले ही अहंकार का कर्म बंधे, लेकिन अक्रम विज्ञान में इतना सँभालने जैसा है!**

'अतिपरिचयात् अवज्ञा'! इन पाँच विषयों का अनादिकाल से अवगाढ़ परिचय होने के बावजूद

भी उनकी अवज्ञा नहीं होती, वह भी आश्चर्य है न! क्योंकि एक-एक विषय के अनंत पर्याय हैं! उनमें से जिस विषय के जितने पर्यायों का अनुभव हुआ, उतनों की अवज्ञा हुई और उतने छूट गए! पर्याय अनंत होने के कारण अनंतकाल तक भटकना पड़ेगा और पर्याय अनंत होने के कारण अंत भी नहीं आएगा! यह तो, ज्ञान के बिना इसमें से छूट नहीं सकते।

अपना मार्ग हर तरह से साहजिक है, लेकिन विषय के बारे में साहजिक नहीं है। इस विषय को तो इगोइज़म करके भी उड़ा देना है! क्योंकि यह चरम शरीरी नहीं है! इसलिए अहंकार करके भी आज्ञा में रहना। भले ही अहंकार का कर्म बंधे, लेकिन अक्रम विज्ञान में इतना सँभालने जैसा है! विषय का ज़रा सा भी ध्यान करे तो ज्ञान भ्रष्ट हो जाता है। '*हतो भ्रष्ट, ततो भ्रष्ट*' हो जाता है।

आज तक नासमझी से चले अवश्य हैं लेकिन यह ज्ञान लेने के बाद तो कितनी समझ उत्पन्न होती है! अत: समझदारी सहित होगा तो वैराग्य आएगा और फिर तोड़-फोड़कर विषय की धज्जियाँ उड़ा देगा। कर्म बदलते ही नहीं ऐसा कोई नियम नहीं है। कर्म बदल सकते हैं। इन अज्ञानी का कर्म कैसे बदलता है? अभी कोई लेनदार आए, तब उस कर्म का उदय तो आया, उसे पूरा तो करना ही पड़ेगा न? लेकिन वह पड़ोसी से पचास रुपये लेता है और लेनदार को पैंतालीस देकर पाँच खुद के पास रखता है। इससे एक कर्म पूरा हुआ और दूसरा कर्म खड़ा किया। इस प्रकार पुराना कर्म तो समाप्त हो जाता है लेकिन नया कर्म खड़ा करते हैं। ये संसारी इसी प्रकार से सभी कर्म पूरे करते हैं। लेकिन क्या ये सभी कर्म चुका देते हैं? नहीं, यह तो नया ओवरड्राफ्ट लेकर चुकाते हैं!

**प्रश्नकर्ता :** ओन अकाउन्ट पूरा करते हैं।

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन इससे आने वाली, अगले जन्म की ज़िम्मेदारी का उन्हें भान नहीं है। वे फिर यहाँ से जानवर में चले जाते हैं। लेकिन इतना सुधरा, इसलिए बहुत अच्छा हुआ न! क्योंकि जो रोज़मर्रा के आचरण हैं, वे कुछ हद तक चलाए जा सकते हैं लेकिन सिर्फ विषय संबंध में ही नहीं चलाया जा सकता। बाकी सभी कुछ चला सकते हैं। अत: दूसरा सबकुछ हम चला लेते हैं, लेकिन आपको क्या करना चाहिए? दिन-रात 'यह बहुत गलत चीज़ है, बहुत गलत चीज़ है', ऐसे जाप करने चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यानी उसके प्रति खेद ही होना चाहिए?

**दादाश्री :** निरंतर खेद रहना चाहिए, तभी हमारा यह कहना कि 'चला लेंगे', वह आपके काम आएगा, वर्ना दादाजी अलाउ करते हैं उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि कोई हर्ज नहीं है। जबकि विषय संबंध को तो अहंकार करके भी तोड़ देना चाहिए। दो-चार जनों से मैंने इस प्रकार से तुड़वा दिया था! अहंकार करके, तहस-नहस कर देते हैं! फिर जो अहंकार किया, उसका कर्म बंधे तो भले ही बंधे, लेकिन वह सारा विषय तो खत्म कर देगा न! ये सारे कर्म ऐसे हैं कि एक के बजाय दूसरा दो तो उसके एवज में छूट जाते हैं। सिर्फ विषय ही ऐसा है कि अहंकार करके भी छूट जाना चाहिए, वर्ना यह विषय तो मार ही डालेगा!

पुराने समय में चारित्र स्थिरता ऐसी, आज जैसी नहीं थी। अभी तो ये लोग मूर्छित हैं। यह तो, यदि ज्ञान लेने के बाद भी विषय की आराधना होगी तो क्या होगा? सत्संग को दगा दिया और ज्ञानी को भी दगा दिया, तो फिर यहाँ से नर्क में जाएगा। यहाँ पर (ज्ञान लेने के बाद) ज़्यादा दंड मिलता है, इसका क्या कारण होगा?

**प्रश्नकर्ता :** ज़िम्मेदारी है न?

**दादाश्री :** नहीं, इस सत्संग को दगा दिया,

ज्ञानी को दगा दिया। बड़ा दगाबाज़ कहा जाएगा। ऐसा तो होता होगा? क्या खुद ऐसा नहीं समझता कि यह गलत है? यह तो जान-बूझकर चला लेते हैं कि कोई हर्ज नहीं, वर्ना 'समभाव से *निकाल*' करने का दुरुपयोग करता है या फिर 'व्यवस्थित है' करके दुरुपयोग करता है। ऐसा सब आपने नहीं सुना था न, पहले?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा तो नहीं सुना था।

**दादाश्री :** अब आपको सब लक्ष्य में रहेगा या छूट जाएगा? आपको ऐसा नहीं होना चाहिए। यह तो मुँह भी नहीं दिखा सकें, ऐसी चीज़ हो जाती है। शोभा नहीं देता आपको। अहंकार से जो हुआ हो उससे उतना कर्म बंध जाता है, कि इतना 'ऑवरड्राफ्ट' लिया। लेकिन 'विषय तो चाहिए ही नहीं', ऐसा होना चाहिए। जो बाहर विषय की आराधना करता हो उसे तो, खुद की पत्नी-बेटी कहीं भी जाए तो एतराज़ नहीं होता। इसलिए उसे नंगा ही कहेंगे न! उसके लिए चारित्र की क़ीमत ही नहीं है न!

अब सारा सेट कर दो। वैसे भी, कल देह छूट जाए, तो अपने आप ही विषय तो छूट ही जाएगा न! तो जीते जी करो (छोड़ दो) वह क्या गलत है? मार-पीटकर कुदरत करवाएँ, उसके बजाय जीते जी आप खुद करोगे तो छूट जाओगे इसमें से! विषय का कर्म उसने रोका, उसके बदले दूसरा कर्म उसे बंधा वापस। भले ही वह सहजभाव नहीं कहा जाएगा और इसलिए दूसरा कर्ज़ा खड़ा किया। यह दूसरा कर्ज़ तो ठीक है, लेकिन यह विषय का कर्ज़ तो बहुत ही गलत है!

विषय का विचार आते ही तुरंत प्रतिक्रमण करना। प्रतिक्रमण होता है न तुझ से? तेरी खुद की इसमें बिल्कुल इच्छा ही नहीं है न? अंदर थोड़ी बहुत इच्छा रहती है कि 'व्यवस्थित है' वगैरह, इस तरह पोल (जान-बूझकर दुरुपयोग करना, लापरवाही) चलाता है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** बाकी पोल चलाए। 'व्यवस्थित है' न, ऐसा कहता है! पोल चलानी हो तो चला सकता है न? पोल चलाने में तो उसकी बहुत जिम्मेदारी है न? वह तो नर्कगति में ले जाएगा। इसलिए हम सावधान करते हैं!

## (सूत्र-6)

**'डिस्चार्ज' तो किसे कहेंगे कि जो अपनी रुचि के बिना अनिवार्य रूप से करना पड़े, उसे! यह तो, अभी लालच है अंदर! ये सब तो राज़ी-खुशी से करते हैं। डिस्चार्ज को किसी ने समझा है?**

**प्रश्नकर्ता :** विषय-कषाय की जलन का वर्णन, मरण से भी ज़्यादा कहा गया है। यानी उसके बजाय मनुष्य मरना पसंद करेगा।

**दादाश्री :** नहीं। उसने तो मृत्यु की क़ीमत ही नहीं रखी। उसने तो अनंत जन्मों से यही किया है, पाशवता ही की है, अन्य कुछ भी नहीं किया। लेकिन मृत्यु तो अच्छा कहलाता है। मृत्यु तो स्वाभाविक चीज़ है और यह तो विभाविक चीज़ है। समझदार को विषय शोभा नहीं देता। एक ओर लाख रुपये मिल रहे हों और उसके सामने विषय का संयोग हो तो लाख को जाने दे, लेकिन विषय का सेवन नहीं करे।

विषय ही संसार का मूल कारण है। जगत् का कॉज़िज़ यही है न! हमने तो इन (शादीशुदा लोगों को) विषय की छूट इसलिए दे रखी है कि नहीं तो इस मार्ग को कोई प्राप्त ही नहीं कर पाता। इसलिए हमने यह अक्रम विज्ञान डिस्चार्ज और चार्ज के रूप में समझाया है। यह विषय डिस्चार्ज है, ऐसा समझने की शक्ति नहीं है न सभी में।

इनका सामर्थ्य क्या? वर्ना हमारा जो शब्द है न, 'डिस्चार्ज', तो यह विषय डिस्चार्ज स्वरूप ही है। लेकिन यह बात समझने का उतना सामर्थ्य ही नहीं है न! क्योंकि ये सब रात-दिन विषय की जलन वाले हैं। वर्ना यह चार्ज और डिस्चार्ज हमने जो रखा है वह एक्ज़ेक्टली वैसा ही है। यह तो बहुत ऊँचा मार्ग बताया है, वर्ना इसमें से कोई धर्म प्राप्त कर ही नहीं पाता न! ये बीवी-बच्चों वाले धर्म कैसे प्राप्त कर पाते?

**प्रश्नकर्ता :** कई लोग ऐसा समझते हैं कि 'अक्रम' में ब्रह्मचर्य का कोई महत्व ही नहीं है। वह तो डिस्चार्ज ही है न!

**दादाश्री :** अक्रम का ऐसा अर्थ होता ही नहीं। ऐसा अर्थ करने वाला 'अक्रम मार्ग' को समझा ही नहीं है। यदि समझा होता तो मुझे उसे विषय के संबंध में फिर से कहना ही नहीं पड़ता। अक्रम मार्ग यानी क्या कि डिस्चार्ज को डिस्चार्ज माना जाता है। लेकिन इन लोगों के लिए डिस्चार्ज है ही नहीं। यह तो, अभी लालच हैं अंदर! ये सब तो राज़ी-खुशी से करते हैं। डिस्चार्ज को किसी ने समझा है? वर्ना हमने जो मार्ग दिया है, उसमें फिर ब्रह्मचर्य से संबंधित कुछ कहने को रहता ही नहीं! यह तो, फिर खुद की भाषा में मनचाहा अर्थ करेंगे!

जो व्यक्ति खाना खा चुका हो, उसे यदि फिर से खाने के लिए बैठाएँ तो वह बहुत शर्माएगा, लेकिन फिर वह खाएगा ज़रूर। परंतु वह क्या करेगा? क्या वह सचमुच खाएगा? इसी तरह से विषय में होना चाहिए। विषय-विकार तो देखना भी अच्छा नहीं लगे, सोचते ही 'अरेरे...' हो जाए! सोचते ही उल्टी होने लगे! ऐसा होना चाहिए।

'डिस्चार्ज' किस भाग को कहते हैं, इसे लोग समझते नहीं हैं और 'डिस्चार्ज' का अर्थ अपनी भाषा में करते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** 'डिस्चार्ज' किस भाग को कहते हैं?

**दादाश्री :** आप चलती गाड़ी से कितनी बार गिर जाते हो? तुम चलती गाड़ी से गिर जाओ तो वह 'डिस्चार्ज' कहलाएगा। वहाँ तुम गुनहगार नहीं हो, लेकिन कोई जान-बूझकर गिरता है क्या? वहाँ उसकी ज़रा सी भी इच्छा होती है? आपको यह बात समझ में आई? बात समझने योग्य है न?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल पक्की समझ में आ गई।

**दादाश्री :** कान पकड़कर कह रहे हो क्या? वर्ना 'डिस्चार्ज' की बात में तो भीतर पोल चलाता है। सिर्फ इस विषय के बारे में ही पोल नहीं चलानी है।

**प्रश्नकर्ता :** पोल कैसे चलाते हैं?

**दादाश्री :** जैसे चलती गाड़ी से गिर जाए, उसे हम 'डिस्चार्ज' कहते हैं, उसी तरह खुद के घर में भी नियम तो होना चाहिए न? यह तो ऐसा है न, कि खुद के हक की स्त्री के साथ का विषय, वह अनुचित नहीं है लेकिन फिर भी साथ-साथ इतना समझना चाहिए कि उसमें अनेकों 'जर्म्स' (जीव) मर जाते हैं। अत: अकारण तो ऐसा होना ही नहीं चाहिए न? कारण हो तो बात अलग है। वीर्य में 'जर्म्स' ही होते हैं और वे मानवबीज के होते हैं। अत: जब तक हो सके, तब तक इसमें सावधान रहना। यह हम आपको संक्षेप में बता रहे हैं, बाकी इसका तो अंत ही नहीं है न!

वह (अब्रह्मचर्य) जो है, वह शरीर के लिए नुकसानदेह चीज़ है। यह आप जो खाते-पीते हो उसका एक्स्ट्रैक्ट (सार) निकलते-निकलते जो वीर्य बनता है, वह पूरा सार है इसलिए उसका उपयोग इकोनोमिकली स्टेज (मर्यादापूर्वक) होना चाहिए। यों ही दुरुपयोग नहीं करना है। यानी आपको तो चंदूभाई से कहना है कि, 'भाई, ऐसा नहीं चलेगा,

दुरुपयोग मत करना'। आप तो विषयी हो ही नहीं। आपको लेना-देना नहीं है लेकिन आपको चंदूभाई से कहना चाहिए। वर्ना फिर चंदूभाई बीमार हो जाएँगे तो आपको ही मुसीबत होगी न! अत: यदि सावधान रहें तो उसमें गलत क्या है? वर्ना यदि शरीर निर्वीर्य हो जाए, तो यह कहेगा 'अरे! गया, वह गया, यह गया।' घन चक्कर! तो पहले दादाजी का कहा नहीं माना और अब गया-गया कर रहा है!

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर यह विषय-विकार क्यों हो जाता है?

**दादाश्री :** वह तो हो जाता है और आपकी बात अलग है। आप तो शादीशुदा हो। आपको तो 'समभाव से *निकाल*' करना है। इन्हें भी, यदि शादी कर लें तो 'समभाव से *निकाल*' करना पड़ेगा, वर्ना पत्नी को दु:ख पहुँचेगा। लेकिन अपना ज्ञान ऐसा है कि जिसे ब्रह्मचर्यव्रत लेना हो, वह उसमें रह सकता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा निरंतर, जिसके लक्ष्य में रहता है, वही सबसे बड़ा ब्रह्मचर्य है। लेकिन जिसे व्यवहार में 'चारित्र' लेने की इच्छा है, उसे बाहरी ब्रह्मचर्य की ज़रूरत है।

यह ज्ञान ऐसा है कि एकावतारी बना दे, लेकिन सतर्क रहना चाहिए और मन में ज़रा सा भी दग़ा नहीं रखना चाहिए। यह विषय शौक की चीज़ नहीं है।

### ( सूत्र-7 )

**तेरी नीयत बिगड़ी, तब से भगवान की कृपा कम होने लगी, ऐसा मुझे पता चलता है न! नीयत चोर है तो फिर खत्म हो गया!**

**प्रश्नकर्ता :** बाकी आपका ज्ञान, आपका जो सुख है, वह सचमुच इन सबसे ऊँचा है, यह बात समझ में आती है।

**दादाश्री :** ऊँचा नहीं, यह ज्ञान तो ऐसा है कि वर्ल्ड में कभी ऐसा हुआ ही नहीं है।

यह जो मैंने आपको दिया है, वह इतना अधिक सुखदायी है कि आपको अन्य सुख फीके लगेंगे। यानी अच्छे ही नहीं लगेंगे, इतना अधिक सुखदायी है! परम सुखदायी है, परम सुख का धाम है!

अपना यह विज्ञान निरंतर समाधि में रखे, ऐसा है। फिर वह भौतिक सुखों की इच्छा ही नहीं रखता न!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन वह वर्तन में नहीं आता।

**दादाश्री :** वर्तन में बहुत सुंदर आ सके, ऐसा है! वर्तन में इतना सुंदर रह सकता है कि बात ही मत पूछो!

**प्रश्नकर्ता :** जब ज्ञान लिया, तब पहला डेढ़ साल ग़ज़ब का गुज़रा, तब वर्तन में भी ग़ज़ब का आया था।

**दादाश्री :** वह तो फिर नीयत बिगड़ी, नीयत नया-नया ढूँढती है फिर। मन का स्वभाव वेराइटीज़ (विविधता) ढूँढना है। इसलिए शुरूआत में इतना अच्छा हो गया था कि मुझसे कहता था कि यह विषय मुझे रास नहीं आएगा, मुझे सदा के लिए ब्रह्मचर्य ही ले लेना है। उसके बजाय अब उल्टी तरफ चल पड़ा है।

**प्रश्नकर्ता :** इसमें तो खुद की ही कमज़ोरी है न?

**दादाश्री :** कमज़ोरी अर्थात् बेहद कमज़ोरी! यह तो मनुष्य को मार डालती है। जब से तेरी नीयत बिगड़ी, तब से भगवान की कृपा कम होने लगी, ऐसा मुझे पता चलता है न!

**प्रश्नकर्ता :** तो अब इसका उपाय क्या है? भगवान की कृपा यदि कम होने लगे, तब फिर तो खत्म ही हो गया न?

**दादाश्री :** तो फिर यह चोर नीयत छोड़ देनी

चाहिए। उस तरफ दृष्टि ही क्यों जानी चाहिए? ये सभी मीनिंगलेस (अर्थहीन) बातें हैं। यह तो तुझे दृष्टि विकसित करनी चाहिए कि यों कपड़ों सहित भी आरपार दिखें यानी कि कपड़े पहने हों, फिर भी कपड़े रहित दिखाई दे, फिर चमड़ी रहित दिखाई दे, ऐसी दृष्टि विकसित करनी पड़ेगी तब खुद की सेफसाइड हो सकेगी न! ऐसा क्यों बोल रहा हूँ? मनुष्य को मोह क्यों होता है? कपड़े पहने हुए देखें कि मोह हो जाता है! लेकिन हमारे जैसी आरपार दृष्टि हो जाए, फिर मोह ही उत्पन्न नहीं होगा न!

**प्रश्नकर्ता :** बीच में थोड़ा समय ऐसा रहता था, बाद में फिर ऐसा नहीं रहा।

**दादाश्री :** अतः चोर नीयत है। नीयत ही गलत थी! और विषय ऐसी चीज़ है कि वहाँ पर एक्सेप्शन (अपवाद) ही नहीं है। यह तो आपमें पाँच आज्ञा पालन करने की शक्ति ही नहीं है। पाँच आज्ञा पालन करनी हो तो भी मैं 'एक्सेप्शन' नहीं दूँगा किसी को भी! क्योंकि यह विषय तो आपको न जाने कहाँ तक स्लिप करके (फिसलाकर) खत्म कर देगा। अतः यदि सिर्फ एक इसी विषय को पार कर लिया तो पूरा हो गया, उसकी सेफसाइड (सलामती) हो जाएगी! हमारी आज्ञा में रहोगे तो आपको सहज ही कृपा मिलेगी। दादा को कुछ लेना नहीं है और देना भी नहीं है। आप आज्ञा में रहोगे, तो हम समझेंगे कि इन लोगों ने आज्ञा में रहकर ज्ञान रोशन किया!

कोई आदमी पाँच-सात दिन से भूखा हो, तो वह लड़ने जाएगा क्या? नहीं, क्यों? उसका मन शांत हो जाता है, वैसा ही इस विषय में है। मन शांत हो जाए, तो बिल्कुल शांत!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादाजी, जब उपवास करता हूँ उस दिन मुझ से स्कूटर भी ठीक से नहीं चलाया जा सकता, ऐसा लगता है।

**दादाश्री :** यह सब वकालत कहलाती है। यहाँ पर वकालत नहीं करनी है। यह तो बचाव कहलाता है। यहाँ बचाव नहीं करना है न!

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, यह मैं बचाव नहीं कर रहा हूँ, लेकिन आपके सामने खोल रहा हूँ।

**दादाश्री :** लेकिन ये सब तो बचाव कहलाते हैं। यहाँ बचाव नहीं करना है। यहाँ पर कहाँ कोई जेल में डाल देंगे? खुद के मन में ऐसा घुस जाता है कि अब उपवास किया इसलिए ऐसा हो जाएगा, इस तरह हो जाएगा, वैसा हो जाएगा, तो वैसा हो जाता है। उपवास तो बहुत शक्ति देता है। यह तो मन तुझे छल रहा है, उल्टी पटरी पर चढ़ा रहा है।

## (सूत्र-8)

**इन ब्रह्मचारियों को, यदि उत्तेजना हो ऐसा आहार दिया जाए तो क्या होगा? मन-वन सब बदल जाएगा! मन पूरी तरह से आहार पर आधारित है, अतः वह पूरे महल को ज़मीनध्वस्त कर देता है!**

**प्रश्नकर्ता :** उपवास का और ब्रह्मचारियों का क्या कनेक्शन (संबंध) है? उन्हें रविवार का उपवास क्यों करना है?

**दादाश्री :** रविवार का उपवास क्यों करते हैं? विषय का विरोधी बना है। विषय मेरी तरफ आए ही नहीं, इसलिए विषय का विरोधी बना, तभी से निर्विषयी हुआ। इस तरह मैं इन्हें विषय का विरोधी ही बनाता हूँ क्योंकि इनसे यों ही विषय छूट जाए, ऐसा नहीं है, ये तो सारे पके हुए फूट (ककड़ी जैसा फल) जैसे हैं, ये तो दूषमकाल के कुलबुलाते फूट हैं। इनसे कुछ छूट नहीं सकता, इसलिए तो दूसरे रास्ते निकालने पड़ते हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** शरीर ज़रा पुष्ट बने ऐसा रखना चाहिए क्या?

**दादाश्री :** नहीं, पुष्ट नहीं लेकिन तेजवान होना चाहिए। जो 'स्टेन्डर्ड' (प्रमाणसर) वज़न है, उतना रखना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** *उणोदरी* और ब्रह्मचर्य में कितना कनेक्शन है?

**दादाश्री :** *उणोदरी* से तो अपनी जागृति अधिक रहती है। उससे ब्रह्मचर्य रहेगा ही न! उपवास करने के बजाय *उणोदरी* अच्छी, लेकिन हमें ऐसा भाव रखना है कि '*उणोदरी* रखनी चाहिए' और खाना खूब चबाकर खाना। पहले दो लड्डू खाते थे तो अब आप उतने टाइम में एक लड्डू खाओ। तो टाइम उतना ही लगेगा, लेकिन कम खाया जाएगा। 'मैंने खाया', ऐसा लगेगा और *उणोदरी* का लाभ मिलेगा। ज़्यादा टाइम तक चबाएँगे तो बहुत लाभ मिलेगा।

हमने अंत तक *उणोदरी* (जितनी भूख लगे उससे आधा भोजन खाना) तप रखा था! दोनों वक्त ज़रूरत से कम ही खाते थे, हमेशा के लिए! कम ही खाते थे ताकि अंदर निरंतर जागृति रहे।

यह जो आहार है, वही खुद दारू है। हम जो आहार खाते हैं, उससे अंदर दारू बनती है। फिर पूरे दिन दारू का नशा रहता है और नशा रहे तो जागृति बंद हो जाती है। अत: क्या कहा है कि सभी तरह का आहार लेना, लेकिन हलका लेना। शारीरिक तंदुरस्ती खत्म नहीं होनी चाहिए। आपको इस शरीर को बहुत कष्ट नहीं देना है, नॉर्मेलिटी में रखना है।

## ( सूत्र-9 )

**किसी भी दिशा में प्रवहन् करना, वह मन का स्वभाव है! इसी वजह से मन को जैसा चाहें वैसे मोड़ा जा सकता है, उसे डाइवर्ट किया जा सकता है। दो-पाँच साल तक ही यदि मन को ब्रह्मचर्य की ओर मोड़े, इस एक ही दिशा में वहन करे तो उसके सामने कोई आँख भी नहीं मिला सकेगा!**

सिर्फ विषय की वजह से यह संसार खड़ा रहा है। अगर यह स्त्री विषय नहीं होता न, तो बाकी सभी विषय तो कभी भी बाधा नहीं डालते। सिर्फ इस विषय का अभाव रहे तो भी देवगति मिल जाए। इस विषय का अभाव हुआ कि बाकी सभी विषय क़ाबू में आ जाते हैं और इस विषय में पड़ा कि विषय से, पहले जानवर गति में जाता है और यदि उससे अधिक विषयी हो तो नर्कगति में जाता है। विषय से बस अधोगति ही है।

**प्रश्नकर्ता :** हमें (इस) वस्तु (आत्मा) की समझ नहीं है, इसलिए उसका अनुभव निरंतर नहीं रह पाता?

**दादाश्री :** आपको तो इसकी समझ ही नहीं है न! यह तो आपको अंदर ठंडक अपने आप रहती है तभी तक ठीक रहता है, लेकिन उसे पूरा (खत्म) होने में तो देर ही नहीं लगेगी न! इन लड़कों को कुछ समझ ही नहीं है न! उन्हें अगर कोई कहे कि 'बच्चे, ले यह बिस्किट' और वह बिस्किट देकर हीरा ले लेगा। तो इनकी समझ कैसी है? वस्तु की कीमत ही नहीं है न! फिर भी ये लड़के पुण्यशाली ज़रूर हैं, लेकिन कहलाएँगे बालक। ये व्रत लेने वाले सभी बालक कहलाएँगे। थोड़ा सा भी दु:ख आए तो यह सबकुछ दाव पर लगा दें! यह तो किसी भी प्रकार के दु:ख पर ध्यान नहीं दें, तब जाकर यह व्रत रह पाएगा। मेरी आज्ञा में पूरी तरह से रहे, तब यह व्रत रहेगा!

ब्रह्मचर्य का यदि कभी सिर्फ छ: महीने ही सच्चे दिल से पालन किया हो, मन-वचन-काया से, तो वे गुलाब इतने-इतने बड़े हो जाते हैं! ब्रह्मचर्य, वह तो सब से बड़ी खाद है। ब्रह्मचर्य तो, जब मन बिल्कुल भी नहीं डिगे, तब वह ब्रह्मचर्य दिमाग़ में

घुसता है और बाद में उसकी वाणी-वर्तन सबकुछ बदल जाते हैं!

ब्रह्मचर्य तो सब से बड़ा साधन है। अपना ब्रह्मचर्य, वह पवित्र चीज़ होनी चाहिए। ब्रह्मचर्य, वह मानसिक चीज़ नहीं है, इस अब्रह्मचर्य का बीड़ी के व्यसन जैसा नहीं है। यह व्यसन वह अलग चीज़ है और अब्रह्मचर्य वह अलग चीज़ है।

अब्रह्मचर्य से ही सभी रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिए यह सिद्धांत रखना चाहिए कि ब्रह्मचर्य पालन करना है और उसे पहले से ही समझ लेना अच्छा है। अस्सी साल की उम्र में इस सिद्धांत को समझेंगे तो वह किस काम का? अपना अस्तित्व एक ही जगह पर रहना चाहिए, दो जगह पर नहीं रहना चाहिए। अतः जब तक हो सके तब तक सिद्धांत का पालन करना। आजकल चारित्र की कीमत ही खत्म हो गई है। ब्रह्मचर्य की तो कीमत ही खत्म हो गई है न! स्वच्छ जीवन जीने की कीमत ही खत्म हो गई है! पवित्र जीवन ही जीना है।

## (सूत्र-10)

**विषय को ज़हर समझा ही नहीं। ज़हर समझेगा तो उसे छूएगा ही नहीं न! इसलिए भगवान ने कहा है कि ज्ञान का फल है विरति! समझने का फल क्या? रुक जाना। विषयों के जोख़िम को समझा नहीं, इसलिए वैसा करने से रुका नहीं।**

**प्रश्नकर्ता :** 'यह कार्य गलत है, यह करने जैसा नहीं है।' यह हमें पता है, फिर भी वह हो जाता है। तो उसे रोकने के लिए क्या प्रयत्न करना चाहिए? कौन सा पुरुषार्थ करना चाहिए?

**दादाश्री :** ऐसा है न, जब तक उस गुनाह का फल क्या है वह नहीं जानते, तब तक वह गुनाह होता रहता है। कुएँ में कोई क्यों नहीं गिरता? ये वकील कम गुनाह करते हैं, ऐसा क्यों? इस गुनाह का यह फल मिलेगा, ऐसा वे जानते हैं। इसलिए गुनाह का फल जान लेना चाहिए। पहले जाँच कर लेनी चाहिए कि गुनाह का क्या फल मिलेगा! 'यह गलत कर रहा हूँ, इसका क्या फल मिलेगा?' यह जाँच कर लेनी चाहिए।

इस दुनिया का ऐसा नियम है कि जो गुनाह के फल को पूरी तरह से जानते हैं, वे गुनाह करते ही नहीं! गुनाह कर रहा है यानी वह गुनाह के फल को पूरी तरह से जानता नहीं है! हम नर्क का फल जानते हैं, इसलिए हम तो कभी भी नर्क का फल आए, ऐसी बात तो, यह शरीर टूट जाए फिर भी नहीं करते। आपने नर्क का स्वरूप सुना तो आपको कैसा लग रहा है अब? इसलिए कर्म का फल क्या यह जान लेना। क्योंकि अगर गुनाह हो रहा है तो अभी तक 'इसका फल क्या है' यह समझा ही नहीं। इसलिए प्रकृति कौन सी बात में गलत कर रही है, यह किसी से पूछना चाहिए। ज्ञानी पुरुष हों तो उन्हें पूछना चाहिए कि, 'अब मुझे यहाँ पर क्या करना चाहिए?' और उसके बावजूद प्रकृति से वह हो जाए तो माफी माँगनी चाहिए! जो प्रकृति आपको पछतावा करवाए, उस प्रकृति का विश्वास ही कैसे कर सकते हैं?

विषय दोष होना, वह सब से बड़ा जोख़िम है! सभी अणुव्रत, सभी महाव्रत टूट जाते हैं! करोड़ों जन्मों के बाद भी विषय छूटे ऐसा नहीं है। यह तो सिर्फ ज्ञानी पुरुष के पास उनकी आज्ञा में रहने से छूट सकता है। दादा हैं, तब तक सभी रोग निकल जाएँगे! क्योंकि दादा में कोई रोग नहीं है! इसलिए जिसे जो रोग निकालने हों, वे निकल जाएँगे। मुझमें पोल होती तो आपका काम नहीं हो पाता!

## (सूत्र-11)

**इस विषय के संबंध में संयोग हुआ तो हमारी नज़र कड़वी हो जाती है, हमें तुरंत सबकुछ पता चल जाता है। यह, 'दादा' की**

**नज़र कड़वी रहती है, वह सिर्फ विषय के बारे में ही, बाकी चीज़ों में नहीं।**

दूसरी गलतियाँ हो सकती हैं, लेकिन 'यह' तो होनी ही नहीं चाहिए। और अगर हो जाए तो हमें बता देना तो रिपेयर कर देंगे, छुड़वा देंगे।

**प्रश्नकर्ता :** हर तरह से छूटने के लिए ही यहाँ दादा के पास आना है।

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं। इसीलिए तो इन आप्तपुत्रों से मैंने सब लिखवा लिया है ताकि मुझे (उनको) नहीं निकालना पड़े, अपने आप ही चले जाना है।

वह विषय यदि 'संयोग' रूप में हो रहा हो न, तो उस पर हमारी कड़वी नज़र होने पर वह छूट जाता है, अपने आप ही। वह ताप ही छुड़वा देता है। हमें डाँटना नहीं पड़ता। इतनी कड़वी नज़र पड़ती है, उस ताप की वजह से उसे रात को नींद तक नहीं आती। वह सौम्यता का ताप कहलाता है। प्रताप का ताप तो जगत् के लोगों के पास है। प्रताप तो, पूरे चेहरे पर तेज रहता है, उनका ब्रह्मचर्य भी अच्छा होता है, शरीर बलवान होता है, वाणी ऐसी प्रतापवान, व्यवहार ऐसा प्रतापवान! यह प्रताप तो होता है संसार में, लेकिन सौम्यता का ताप नहीं होता किसी के पास। अब ये दोनों साथ में हों, तब जाकर काम होता है। सूर्य-चंद्र के दोनों गुण! सिर्फ प्रतापी पुरुष होते हैं, लेकिन कुछ ही, ज़्यादा तो इस दूषमकाल में होते ही नहीं हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** और अपना यह ज्ञान ही ऐसा है कि अंदर से ही यों ज़ोर लगाकर सावधान करता रहता है।

**दादाश्री :** हाँ, वह ज़ोर लगाता है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी थोड़ा सा भी कुछ इधर-उधर हो गया हो न, तो अंदर शोर मच जाता है कि 'यहाँ चूके, वापस लौटो यहाँ से।' अर्थात् अंदर सेफ (सलामती) की तरफ ही पूरा खींच लाता है हमें।

**दादाश्री :** हारने लगो तो मुझे बता देना। एक ही जन्म यदि अपवित्र नहीं हुआ तो मोक्ष हो जाएगा, हरी झंडी और शादी कर लो तो भी हर्ज नहीं है, तब भी मोक्ष में दिक्कत नहीं आएगी।

**प्रश्नकर्ता :** हम इच्छापूर्वक किसी को छूएँ तो वह वर्तन में आया ऐसा कहा जाएगा न?

**दादाश्री :** इच्छापूर्वक छूएँ? तब तो वर्तन में ही आया कहलाएगा न! इच्छापूर्वक अंगारों को छूकर देखना न!

**प्रश्नकर्ता :** समझ में आ गया।

**दादाश्री :** उसके बाद अगर आगे की इच्छा तो.. इच्छा होते ही वहाँ से तो निकाल ही देनी चाहिए जड़ से, उगते ही, बीज उगते ही आप जान जाते हैं कि यह कौन सा बीज उग रहा है? तब कहते हैं, विषय का। तो तोड़कर निकाल देना है। वर्ना उसे छूने पर आनंद हुआ, तब तो फिर खत्म हो गया। वह जीवन ही नहीं रहा न, मनुष्य का! अब कानून समझकर करना यह सब। जिसके वर्तन में आ जाए, तो उसका आना हम बंद कर देते हैं क्योंकि नहीं तो यह संघ टूट जाएगा। संघ में तो विषय की दुर्गंध आनी ही नहीं चाहिए। अत: अगर ऐसा हो तो मुझे बता देना। शादी करेगा फिर भी उपाय है कि शादी करने पर मोक्ष चला नहीं जाएगा। तेरे पास उपाय रहे, ऐसा कर देंगे।

## (सूत्र-12)

**अपवित्रता तो बिल्कुल भी नहीं चलेगी, यहाँ केवल पवित्र पुरुषों का काम है!**

जिसका निश्चय है न, वह रह सकता है! सिर पर ज्ञानी पुरुष की छत्रछाया है। ज्ञान लिया हुआ है, अंदर सुख तो रहता ही है न, फिर किसलिए

कुएँ में गिरना? इसलिए यह जो प्रमाद किए हैं न, उसके बाद मुझे अच्छे ही नहीं लगते तुम। अभी भी प्रमादी और यूज़लेस! कुछ ठिकाना ही नहीं है न! मेरी मौजूदगी में सोते हैं तो फिर क्या बात करनी? कब लिखकर देने वाले हो?

**प्रश्नकर्ता :** आप कहें तब, अभी लिखकर दे देते हैं।

**दादाश्री :** दो कलमें, एक विषयी व्यवहार, विषयी व्यवहार हो जाए तो हम खुद ही निवृत्त हो जाएँगे, किसी को निवृत्त नहीं करना पड़ेगा, ऐसा लिखना है। हम खुद ही यह स्थान छोड़कर चले जाएँगे और दूसरा अगर यह प्रमाद हो जाए तो उस समय संघ हमें जो भी दंड देगा, वह। तीन दिन तक भूखे रहने का या कुछ भी, जो भी दंड देंगे, उसे स्वीकार कर लेंगे। हम कहाँ बीच में आएँ! यह संघ है न! ये लोग मेरी मौजूदगी में इतना सोएँ वह क्या अच्छा दिखता है? हाँ, दोपहर में तो सो रहे थे, तो ये पकड़े गए सब। पहले भी कई बार पकड़े गए थे। यह तो सारा कचरा माल है! वह तो जैसे-तैसे थोड़ा बहुत सुधरा। तुझे ऐसा लिखकर देना है। आप्तपुत्र ऐसा लिखकर देंगे हमें, दो कलमें, कौन-कौन सी कलम लिखकर देंगे?

**प्रश्नकर्ता :** एक तो, कभी भी विषय से संबंधित दोष नहीं करूँगा और करूँगा तो भी...

**दादाश्री :** करूँगा तो तुरंत ही मैं अपने घर चला जाऊँगा। आप्तपुत्र की यह जगह छोड़कर चला जाऊँगा। आपको मुँह दिखाने के लिए नहीं रुकूँगा।

और दूसरा, ज्ञानी पुरुष की मौजूदगी में झोंका नहीं खाऊँगा। किसी भी प्रकार का प्रमाद नहीं करूँगा। ये दो शर्तें लिखकर सब तैयार हो जाओ। यानी ब्रह्मचर्य महत्वपूर्ण है।

मैं इन्हें कहता हूँ, आराम से शादी कर लो। लेकिन कहते हैं नहीं करनी। मैं मना नहीं करता। आप शादी कर लो। शादी करोगे फिर भी मोक्ष चला नहीं जाएगा। फिर हमारे सिर पर आरोप नहीं आएगा। आपको बीवी नहीं पुसाए तो उसमें मैं क्या करूँ? तब कहते हैं, हमें नहीं पुसाएगी। ऐसा खुलासा करते हैं न! इसलिए अगर तुझे पुसाए तो शादी करना और नहीं पुसाए तो मुझे बताना।

अंदर माल भरा हुआ हो तो शादी करके उसका हिसाब पूरा करो। शादी की, इससे हमेशा के लिए कोई पति नहीं बन जाता। सारे रास्ते होते हैं।

मन बिगड़ जाए तो प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे, वह शूट ऑन साइट (दोष होते ही तुरंत) होना चाहिए। मन से दोष हुए हों तो वह चला लेंगे। उसका हमारे पास उपाय है, उसका इस्तेमाल करके हम धो देंगे। वाणी से और काया से होगा तो नहीं चला सकते। पवित्रता आवश्यक है ही! कलमें तुझे अच्छी लगीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, अच्छी लगीं।

**दादाश्री :** तो लिखकर ले आना। अच्छी नहीं लगें तो नहीं। कलमें मंजूर नहीं हों तो अभी बंद रखना। जब एडमिशन लेने लायक हो जाए, तब करना।

हमारी मौजूदगी में बिल्कुल भी नींद नहीं आनी चाहिए, किसी को। कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। निरंतर विनय रहना चाहिए। पूरे दिन मेरी मौजूदगी में कभी भी आँखें मिच जाएँ वह नहीं चलेगा और अपवित्रता तो बिल्कुल भी नहीं चलेगी। यहाँ बिल्कुल पवित्र पुरुषों का काम है! पवित्रता होगी तो वहाँ से भगवान इधर-उधर जाएँगे नहीं!

मैंने सभी से कहा है, कि 'भई, ऐसी पोल तो नहीं चलेगी, यह अनिश्चय है।' इन आप्तपुत्रों ने शादी नहीं की लेकिन निश्चय है इसलिए आचरण मत बिगड़ने देना। हर कोई बोलो तो, कौन दृढ़ता से पालन करेगा? हर कोई बोलो, खड़े होकर बोलो न!

आचरण बिगड़े, उसे तो डिसमिस कर देना। क़रार लिखकर दिए हैं मुझे। नहीं चलेगी अपवित्रता, सूअर जैसा व्यवहार! सूअर और इसमें फर्क क्या रहा फिर? देखो, पवित्र लोग तैयार हुए है, जगत् का कल्याण करेंगे!

**( सूत्र-13 )**

**अभी ब्रह्मचर्य रह पाता है, वह आपका पुण्य है और जब पुण्य बदले तब पुरूषार्थ की ज़रूरत है! इसके लिए समूह में रहना है।**

तुझे ब्रह्मचर्य के लिए परख करना आता है? वह परख करना आ जाए तो काम का! सभी तरह से परख लेना चाहिए!

**प्रश्नकर्ता :** इसमें मुझे खुद को ऐसा लगता है, कि मेरा पुरुषार्थ बहुत मंद है।

**दादाश्री :** वह तो, वहाँ सभी के साथ रहेगा न, तब देखना पुरुषार्थ का योग! ब्रह्मचर्य पालन के लिए इतने कारण होने चाहिए। एक तो अपना यह 'ज्ञान' होना चाहिए। इसके अलावा इतनी आवश्यकता तो है ही कि ब्रह्मचारियों का समूह होना चाहिए। ब्रह्मचारियों की जगह शहर से ज़रा दूर होनी चाहिए और साथ ही पोषण होना चाहिए। यानी ऐसे सारे 'कॉज़ेज़' (कारण) होने चाहिए। ब्रह्मचारियों के समूह में रहें, तब तक वह प्रख्यात रहता है, लेकिन यदि अलग हो गया तो वह प्रख्यात नहीं रहता। फिर वह दूसरे ताल में आ जाता है न! समूह में रहें तब तो दूसरा विचार ही नहीं आता न! यही अपना संसार और यही अपना ध्येय! दूसरा विकल्प ही नहीं न! और सुख चाहिए, तो वह तो अंदर अपार है, अपार सुख है!

**प्रश्नकर्ता :** ब्रह्मचर्य के लिए संगबल की ज़रूरत पड़ती है न?

**दादाश्री :** हाँ, ज़रूरत पड़ती है। संगबल की ज़रूरत तो है। कैसा भी ब्रह्मचारी हो, लेकिन ज़रा सा भी कुसंग उसके लिए हानिकारक है क्योंकि कुसंग का रंग यदि लग जाए तो वह हानि किए बगैर रहेगा ही नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** इसका अर्थ ऐसा हुआ कि कुसंग निश्चयबल को काट देता है?

**दादाश्री :** हाँ, निश्चयबल को काट देता है! कुसंग ही पोइज़न (ज़हर) है। कुसंग से तो बहुत दूर रहना चाहिए। कुसंग का असर मन पर होता है, बुद्धि पर होता है, चित्त पर होता है, अहंकार पर होता है, शरीर पर होता है। सिर्फ एक ही साल के कुसंग से होने वाला असर तो पच्चीस-पच्चीस साल तक रहा करता है। यानी एक ही साल का कितना खराब फल आ जाता है! फिर वह पछतावा करता रहें फिर भी छूट नहीं पाता और एक बार फिसलने के बाद और ज़्यादा गहराई में उतरते जाता है और अंत में तले तक उतार देता है। फिर अगर पछतावा करे, वापस लौटना चाहे फिर भी लौट नहीं सकता। अत: जिसका संग सुधरा, उसका सबकुछ सुधर गया और जिसका संग बिगड़ा, उसका सबकुछ बिगड़ गया। सब से बड़ा जोख़िम कुसंग है। सत्संग में पड़े रहने वाले को दिक्कत नहीं आती।

समूह में एक-दूसरे के विचारों का असर होता है! ब्रह्मचर्य का पालन करना आसान नहीं है, उसमें कुदरत का साथ चाहिए। अपना पुण्य और पुरुषार्थ चाहिए। फिर अंदर आनंद उत्पन्न होगा और वह भी आप सब साथ में रहोगे तब होगा। क्योंकि आमने-सामने असर होता है। पचास ब्रह्मचारियों के साथ पाँच नालायक लोगों को रख दें तो क्या होगा? दूध फट जाएगा।

चारित्र से संबंधित शिकायत नहीं आनी चाहिए! जहाँ चारित्र से संबंधित शिकायत आए, वहाँ धर्म है ही नहीं, यह तो पूरी दुनिया कबूल करती है। चारित्र से संबंधित गड़बड़ नहीं होनी

चाहिए वहाँ। यदि और कोई भूल-चूक होगी तो चला लेंगे, लेकिन चारित्र से संबंधित गड़बड़ तो चला ही नहीं सकते। चारित्र तो मुख्य आधार है।

'ब्रह्मचर्य आश्रम' में रहना हुआ, वहाँ पर अगर कुछ भूल-चूक हुई तो सब मिलकर निकाल ही देंगे। इसलिए पहले से संभलकर चलना, विषय से संबंधित नासमझी की वजह से ब्रह्मचर्य नहीं टिक पाता। ब्रह्मचर्य के बारे में ज्ञानी पुरुष से यदि समझ लेगा तो ब्रह्मचर्य बहुत अच्छी तरह से टिक सकेगा। समझने की ही ज़रूरत है इसमें।

## ( सूत्र-14 )

**जब एक्ज़ेक्टली ऐसा समझ में आ जाता है तब वह समझ ही क्रियाकारी हो जाती है। फिर वह पोइज़न को छूता ही नहीं।**

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या ऐसा है कि विषय समझ से जाएगा? जैसे-जैसे समझ बढ़ती जाएगी, वैसे विषय चला जाएगा!

**दादाश्री :** समझ से ही चला जाएगा। यदि ऐसा समझ में आ गया न कि 'यह साँप ज़हरीला है और अगर काट लेगा तो तुरंत मर जाएँगे,' तो फिर वह ज़हरीले नाग से दूर ही रहेगा। उसी तरह इसमें भी समझ बैठ जानी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** समझते हैं फिर भी जगत् के विषयों में मन आकर्षित रहता है, समझते हैं कि सही-गलत क्या है, फिर भी विषयों से मुक्त नहीं हो पाते। तो इसका क्या उपाय?

**दादाश्री :** जो समझ क्रियाकारी हो वही सही समझ कहलाती है, बाकी सब बंजर समझ कहलाती है। अभी उसे इस समझ की एक्ज़ेक्टनेस नहीं आई है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन वह समझ में क्यों नहीं आता?

**दादाश्री :** अनादिकाल से आराधन किया हुआ है न, उसी को सत्य माना है न!

**प्रश्नकर्ता :** वह ठीक है, लेकिन वह आराधन किया हुआ और आज का ज्ञान, उसमें अभी भी क्यों युद्ध चलता रहता है?

**दादाश्री :** विस्तार से सोचने की खुद की शक्ति ही नहीं है न!

**प्रश्नकर्ता :** शक्ति नहीं है या उसकी इच्छा नहीं है?

**दादाश्री :** नहीं, शक्ति नहीं है। इच्छा तो पूरी है।

**प्रश्नकर्ता :** अब मुझे ऐसा लग रहा है कि शक्ति तो है ही।

**दादाश्री :** और सारी शक्ति होती तो है, लेकिन वह उत्पन्न नहीं हुई है न!

**प्रश्नकर्ता :** तो वह शक्ति उत्पन्न कैसे होगी?

**दादाश्री :** वह तो रात-दिन उसी के विचार हों, उसी पर विचारणा करता रहे और उसमें कितना आराधन करने योग्य है और वह कितना करने योग्य है, तुरंत अंदर जैसे-जैसे आपकी विचारणा होती जाएगी न, वैसे-वैसे खुला होता जाएगा।

## ( सूत्र-15 )

**निरंतर विचारशील हो उसी का वैराग्य टिकता है।**

ज्ञानी पुरुष की आज्ञा से चारित्र लेने में हर्ज नहीं, लेकिन इसके साथ ही चारित्र लेने के बाद इस चीज़ पर इतना अधिक सोच लेना चाहिए कि उस सोच के अंत में खुद का ही मन ऐसा हो जाए कि विषय तो बहुत ही बुरी चीज़ है। यह विषय तो अत्याधिक मोह के कारण उत्पन्न हुई चीज़ है।

जब 'ज्ञानी पुरुष' के पास जाते हो, तब वे

आवरण हटा देते हैं और आपकी शक्तियाँ खिल उठती हैं। भीतर सुख भी अपार है, फिर भी विषयों में सुख खोजते हैं। अरे, विषय में सुख होता होगा कहीं? इन कुत्तों को भी यदि खाना-पीना दिया हो न, तो वे भी बाहर नहीं जाते। ये बेचारे तो भूख के कारण बाहर घूमते रहते हैं। ये मनुष्य सारा दिन खाकर घूमते रहते हैं। अत: मनुष्यों को भूख का दु:ख मिटा है तो उन्हें विषयों की भूख लगी है। मनुष्य में से पशु बनने वाला हो, तभी तक विषय है। लेकिन जो मनुष्य परमात्मा बनने वाला है उसमें विषय नहीं होता।

ऐसा है न कि मनुष्यों ने विषय का तो पृथक्करण करके कभी देखा ही नहीं। यदि मानवधर्म के तौर पर, विषय का पृथक्करण करें, जैसे कि हम किसी चीज़ का पृथक्करण करते हैं कि उसमें क्या-क्या चीज़ें मिली हुई हैं, ऐसे अलग करते हैं। उसी तरह यदि विषय का पृथक्करण करें तो मनुष्य कभी भी फिर विषय करेगा ही नहीं। दो दिन से ज़्यादा बासी पकौड़े खाना ही नहीं चाहिए, फिर भी यदि तीन महीने के बासी पकौड़े खा लिए हों, तो भी वह जीवित रहेगा, लेकिन विषय करेगा तो वह जीवित नहीं रहेगा। विषय, वह ऐसी चीज़ है कि उसका पृथक्करण करें तो खुद को वैराग्य ही रहा करेगा। अत: यह मोह है, मूर्छितपना है। यह तो हम बात कर रहे हैं, वर्ना ऐसी बात कोई करता नहीं न! ऐसा कहें तभी तो वैराग्य उत्पन्न होगा न लोगों में!

**प्रश्नकर्ता :** वैराग्य टिके ऐसा कोई नियम है?

**दादाश्री :** वैराग्य टिके तब तो काम ही निकल जाए। बिना विचार के वैराग्य नहीं टिक सकता। निरंतर विचारशील हो उसी का वैराग्य टिकता है। कहता है, 'मैं भोग रहा हूँ', 'अरे, इसमें क्या भोगना है?' जानवरों को भी शर्म आती है इसमें तो! भोगने से ही यह सब भूल जाता है फिर। कर्ता-भोक्ता हुआ कि सारा उपदेश ही भूल जाता है। कर्ता-भोक्ता नहीं हुआ तो सारा उपदेश उसके ध्यान में रहा करता है। तभी वैराग्य टिकता है न? वर्ना वैराग्य टिकेगा ही नहीं न!

वैराग्य के लिए तो अनुभवज्ञान की ज़रूरत है, यों ही देखादेखी करने से नहीं चलेगा! यह ज्ञान प्राप्त हुआ इससे 'आत्मदृष्टि' हुई, इसलिए अब जागृति बढ़ेगी, वैसे-वैसे वह भी आरपार देखने लगेगा। आरपार देखने लगा कि अपने आप ही वैराग आएगा। देखा तो वैराग आएगा ही और तभी वीतराग हुआ जा सकता है, वर्ना वीतराग हुआ जा सकता होगा क्या? और वास्तव में एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है।

## ( सूत्र-16 )

**यह सामायिक तो किस हेतु से है कि अभी तक विषय भाव का बीज खत्म नहीं हुआ है और वह बीज में से ही चार्ज होता है और उस विषय भाव के बीज को खत्म करने के लिए यह सामायिक है।**

इस 'ज्ञान' के बाद जिसे जल्दी हल लाना हो उसे, विषय के विचार जिसे अच्छे नहीं लगते हों और उनसे छूटना हो वह, इस सामायिक से, शुद्ध उपयोग से, विलय कर सकता है।

**प्रश्नकर्ता :** फिर भी ऐसा नहीं लगता कि इसे कर पाएँगे।

**दादाश्री :** ऐसा कुछ भी नहीं है। एक, *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) और दूसरा, सिन्सियरिटी, सिर्फ ये दो ही हों तो सबकुछ प्राप्त हो सकता है। बाकी इसमें कोई मेहनत करनी ही नहीं होती।

सामायिक में तो, खुद का जो दोष है, उसी को रख देना! अहंकार हो तो अहंकार रख देना, विषय रस हो तो विषय रस रख देना, लोभ-लालच हो तो उसे रख देना। इन गाँठों को सामायिक में रख दीं और उन गाँठों पर ज्ञाता-द्रष्टा रहें तो वे

विलय हो जाएँगी। अन्य किसी तरीके से ये गाँठें विलय हो पाएँ, ऐसी नहीं हैं। यह सामायिक इतनी आसान, सरल और सब से ऊँची चीज़ है!

विषय की गाँठ बड़ी होती है, इसलिए उसके *निकाल* की बहुत ही ज़रूरत है, तो कुदरती रूप से अपने यहाँ यह सामायिक शुरू हो गई है! सामायिक करो, इस सामायिक से सब विलय हो जाता है! कुछ करना तो पड़ेगा न? दादा हैं, तब तक सारा रोग निकालना पड़ेगा न? एकाध गाँठ ही भारी होती है, लेकिन जो भी रोग है उसे तो निकालना ही पड़ेगा न? उसी रोग की वजह से अनंत जन्मों से भटके हैं न?

आपको विषय नहीं चाहिए, लेकिन विषय छोड़ते नहीं न! आपको गड्ढे में नहीं गिरना हो फिर भी गिर जाएँ तो क्या करना चाहिए? तुरंत ही एक घंटे तक दादा से माँगना चाहिए कि, 'दादा, मुझे ब्रह्मचर्य की शक्ति दीजिए', ताकि शक्ति मिल जाए और प्रतिक्रमण भी हो जाएँ। फिर दिमाग़ में उसकी 'वरीज़' (चिंता) मत रखना। गड्ढे में गिरे तो तुरंत ही सामायिक करके धो देना। सामायिक यानी हाथ-पैर धोकर, कपड़े धो-कर, सूखाकर और समेटकर साफ-सुथरे हो जाना। तुरंत सामायिक नहीं हो सके तो दो-चार घंटों बाद भी कर लेना, लेकिन लक्ष्य में रखना है कि सामायिक करनी बाकी है।

## ( सूत्र-17 )

**निडरता यानी क्या कि अब मुझे कोई हर्ज नहीं है।**

कुछ लोग, मन में ऐसे उलझते रहते हैं कि मैंने इतने सारे विषय भोगे हैं, मेरा क्या होगा? तब वे मन में से यह निकाल दें इसलिए मुझे ऐसा कहना पड़ता है कि विषय, आत्मा को स्पर्श ही नहीं कर सकते। दोनों तरफ का बताना पड़ता है न! बाकी हम किसी से विषय संबंधी बात ही नहीं करते, एक अक्षर तक नहीं कहते।

'आत्मा का क्रियावाद अज्ञानता की वजह से है।' जबकि लोग कहते हैं कि आत्मा ने यह किया, आत्मा ने वह किया। लेकिन आत्मा अत्यंत सूक्ष्मतम वस्तु है, विषय एकदम स्थूल हैं। आँखों से देखे जा सकें, ऐसे विषय हैं, स्पर्श से अनुभव हों, ऐसे विषय हैं। अब विषय, वे एकदम स्थूल हैं। छोटे बच्चे भी समझ जाते हैं कि इस विषय में मुझे आनंद आया। अरे भाई, स्थूल का और सूक्ष्मतम का मेल कैसे बैठेगा? उन दोनों में कभी मेल हो ही नहीं सकता और मेल हुआ भी नहीं है। विषय का स्वभाव अलग है और आत्मा का स्वभाव अलग। आत्मा ने पाँच इन्द्रियों के कोई भी विषय कभी-भी भोगे ही नहीं। जबकि लोग कहते हैं कि मेरे आत्मा ने विषय भोगा! अरे, आत्मा कभी विषय भोगता होगा? इसलिए कृष्ण भगवान ने कहा है कि, 'विषय, विषय में बर्तते हैं!' ऐसा कहा फिर भी लोगों की समझ में नहीं आया। और यह तो कहता है कि, 'मैं ही भोग रहा हूँ।' वर्ना लोग तो कहते कि, 'विषय, विषय में बर्तते हैं, आत्मा तो सूक्ष्म है, इसलिए भोगो।' इस प्रकार उसका भी दुरुपयोग कर लेते। यदि इन शब्दों का दुरुपयोग करें तब तो मार ही डालेगा। इसलिए इन लोगों ने बाड़ बनाई ताकि कोई दुरुपयोग नहीं करें।

**प्रश्नकर्ता :** अब इस बात का दुरुपयोग हो सकता है न! मानो लाइसेन्स मिल गया हो, ऐसे दुरुपयोग कर लेते हैं।

**दादाश्री :** ऐसा है न, यह बात तो कैसी है? सोने की कटार होती है न, उसका कैसे उपयोग करें, उसका एक नियम होता है। अब उसका कोई दुरुपयोग करे और पेट में मार दे तो उसे आप कैसे मना कर सकते हैं? क्योंकि जो सुल्टा काम करे, वह उल्टा काम भी कर सकता है। लेकिन मैं तो साइन्स बता रहा हूँ, जो विज्ञान है वह बता रहा हूँ कि आत्मा ने कभी भी विषय नहीं भोगा। सिर्फ इगोइज़म (अहंकार) ही है कि 'मैंने यह किया'। वह कर्ताभाव मैं छुड़वा देता हूँ कि, ''भाई, तू कर्ता

नहीं है। यह तो 'व्यवस्थित' कर्ता है।'' यह तो आपने आरोपण किया है कि 'मैंने किया' और वह इगोइज़्म के तौर पर आपको उसका फल मिलता है।

**प्रश्नकर्ता :** आरोपण करते हैं इसीलिए आवरण आता है न? आरोपण का भाव, वही आवरण है?

**दादाश्री :** और कौन सा आवरण? वही आवरण है और वही अगले जन्म का बीज! यदि आरोपण नहीं, तो अगले जन्म का बीज ही नहीं रहेगा, फिर तो आप मुक्त ही हो। लेकिन 'उसने' जो बिलीफ (मान्यता) में माना हुआ है कि 'मैं बंधा हुआ हूँ', इसलिए बंधन महसूस होता है। वह बंधन वाली बिलीफ फ्रैक्चर हो जाए और 'किस प्रकार से मैं मुक्त हूँ' यह भान हो जाए, तो आप मुक्त ही हो!

इसलिए पहली बार हमने इस पुस्तक में लिखा है कि विषय, विष नहीं हैं लेकिन विषयों में निडरता, वह विष है। निडरता यानी क्या कि कुछ लोग कहते हैं कि, 'दादा ने मुझे ज्ञान दिया है, तो अब मुझे कोई विषय बाधक नहीं है। मुझे तो भोगने में कोई हर्ज ही नहीं है न!' तो खत्म हो गया! इसलिए बात को समझो।

इतने सारे जन्म हुए, लेकिन आत्मा ने एक भी विषय भोगा ही नहीं। हम आपको जो आत्मा देते हैं वह निर्लेप और असंग ही देते हैं। कोई कहे कि स्त्रियों के साथ रहते हुए आत्मा कैसे असंग रह सकता हैं? तब हम कहते हैं कि 'आत्मा बिल्कुल सूक्ष्म है! और ये जो विषय हैं, वे स्थूल स्वभाव के हैं! दोनों का कभी-भी मेल हुआ ही नहीं।' यह बात ज्ञानी पुरुष जानते हैं और तीर्थंकर भी जानते हैं लेकिन तीर्थंकर स्पष्ट रूप से बताते नहीं हैं क्योंकि तीर्थंकर यदि स्पष्ट कह दें तो लोग उसका दुरुपयोग करेंगे। तीर्थंकर स्पष्टीकरण नहीं करते। हम स्पष्ट कर देते हैं, वह भी गुप्त रूप से, कुछ ही लोगों के लिए, वर्ना फिर उसका दुरुपयोग होने लगेगा कि आत्मा तो सूक्ष्म स्वभाव का है और विषय का और आत्मा का कोई लेना-देना है ही नहीं, इसलिए अब कोई हर्ज नहीं है। और 'हर्ज नहीं है' कहा कि भूत घुस जाएगा!

कर्मों के दबाव से यह क्रिया होती रहती है। उसमें भी यह क्रिया स्थूल है, आप सूक्ष्म हो। लेकिन यदि यह ज्ञान आपके मन में रहे कि आत्मा को तो कुछ स्पर्श ही नहीं करता, अतः हर्ज नहीं है तो वह उल्टा कर देगा। इसलिए हम ऐसा बताते ही नहीं कि आत्मा सूक्ष्म-स्वभावी है। हम तो ऐसा कहते हैं कि विषयों से डरो। विषय, वे विष नहीं हैं लेकिन विषय में निडरता वही विष है। निडरता यानी क्या कि अब मुझे कोई हर्ज नहीं है। लेकिन संपूर्ण ज्ञानी होने के बाद और संपूर्ण अनुभवज्ञान होने के बाद ही ऐसा कह सकते हैं कि आत्मा को कुछ स्पर्श नहीं करता। यह अन्य सबकुछ तो हम आपको स्पष्ट करने के लिए समझाते हैं।

### (सूत्र-18)

**स्वच्छंद, वह सब से बड़ा रोग कहलाता है कि, 'अब मुझे कुछ भी बाधक नहीं है,' वही विष है।**

**प्रश्नकर्ता :** यदि निडरता आ जाए तो फिर स्वच्छंदता आ जाती है न?

**दादाश्री :** स्वच्छंदता आए, उसी क्षण मार खिला देती है। इसलिए हम यह बताते नहीं हैं। वर्ना इन जवान लड़कों में उल्टा हो जाएगा। यह तो आप जैसे जो कि किनारे पर आ गए हैं, उनसे यह बात करते हैं। जवान लोग तो वापस कुछ उल्टा पकाएँगे! लेकिन वे यदि 'यथार्थ ज्ञान' समझें और उस ज्ञान में रहें तो कुछ स्पर्श नहीं कर सकेगा, लेकिन यह ज्ञान उतना नहीं रह पाता न! मनुष्य की इतनी शक्ति नहीं है न! अनुभव हुए बिना काम का नहीं है। जब तक अनुभव नहीं होता, तब तक आज्ञा में रहना।

यह तो किसी के मन में ऐसी शंका होती हो कि, 'संसार में रहते हैं और विषय तो हैं, तो यह कैसे संभव है?' तो आपको शंका न रहे इसलिए हम यह बात कर रहे हैं वर्ना लोग तो दुरुपयोग करेंगे। आज कल के लोगों को तो यह पसंद ही है इसलिए दुरुपयोग कर लेंगे क्योंकि विपरीत बुद्धि अंदर तैयार ही रहती है। फिर भी यह जो ज्ञान दिया है, वह और ही तरह का विज्ञान है! हर तरह से रक्षण करे ऐसा है, लेकिन यदि कोई जान-बूझकर बिगड़ना चाहे तो बिगड़ जाएगा, सब खत्म कर डालेगा! इसलिए हमने कहा है कि हमारी इन आज्ञाओं में रहना। हम आपको इतनी ऊँचाई पर ले गए हैं कि यहाँ से, ऊपर से यदि आप लुढ़के तो फिर हड्डियाँ भी नहीं मिल पाएँगी। इसलिए सीधे चलना और ज़रा सा भी स्वच्छंद मत करना। स्वच्छंद तो इसमें चलेगा ही नहीं!

हमेशा हमारी दी गई आज्ञा में रहना ही अच्छा है। जिसने खुद के लेवल पर लिया, वह स्वच्छंद पर ले जाता है। इस स्वच्छंद ने ही लोगों को गिरा दिया है न! इसीलिए हम ये आज्ञा देते हैं न!

**(सूत्र-19)**

**विषयों में निडरता उसे तो लापरवाही कहते हैं।**

**प्रश्नकर्ता :** इसमें एक बात तो सीधी है कि आपने कहा कि भगवान के लिए तो यह सही है और यह गलत है, ऐसा है ही नहीं इसलिए क्या अच्छा और क्या गलत, फिर यह प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, वह प्रश्न तो गौण हो जाता है न?

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन वह भगवान की दृष्टि में है और जब तक आप भगवान नहीं हो जाते, तब तक आप गुनहगार हैं! अत: यदि गलत हुआ हो तो उसका खेद होना चाहिए! यह मैं जो बता रहा हूँ, वे शब्द दुरुपयोग करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। आपको बोदरेशन (बोझ) नहीं रहे, इसलिए कह रहा हूँ। किसी के मन में ऐसा नहीं लगे कि मुझे कर्म बंधन हो रहा होगा! इसलिए खुलकर कह रहा हूँ। वर्ना छान-छानकर नहीं बोलता कि, 'भाई, कर्म तो बंधेगा, यदि आप कभी ऐसा करोगे तो?' लेकिन मैं आपको निर्भय बना देता हूँ। निर्भय नहीं बनाता?

अपने 'ज्ञान' से दो-चार जन्मों में कभी न कभी, देर-सवेर लेकिन मोक्ष में जाएगा, पंद्रह जन्मों में भी मोक्ष में जाए तो उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन इसमें से जो लटक जाएगा वह तो अस्सी हज़ार सालों तक लटकता रहेगा फिर भी ठिकाने नहीं लगेगा! अस्सी हज़ार सालों तक बहुत ही परेशानी वाला काल आने वाला है। इसलिए इसमें से लटके नहीं इतना आपको देखना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, किस में से नहीं लटके? इसमें से यानी किस में से?

**दादाश्री :** इस 'ज्ञान' में से। यह 'ज्ञान' लेने के बाद जान-बूझकर उल्टा करें तो फिर क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** 'ज्ञान' लेने के बाद कोई व्यक्ति उल्टा कर सकता है क्या?

**दादाश्री :** हाँ, कर सकता है न! आपके घर के सामने पौधे लगाए हों, बगीचा आपने खुद लगाया हो, और आपको उखाड़ देना हो तो कोई मना करेगा?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, ज्ञान लेने के बाद उसे ऐसा करने का विचार तक आ सकता है क्या?

**दादाश्री :** कोई-कोई ऐसा होता है, सभी ऐसे नहीं होते। उसे हम चेतावनी दें तो शायद वापस लौटे! यह लापरवाह रहने जैसी चीज़ नहीं है! लापरवाही तो मार डालेगी!

भय रखने जैसा हो तो इस विषय का भय रखने जैसा है। इसलिए विषय से सावधान हो जाओ। इन

साँप, बिच्छू और बाघ से सावधान नहीं रहते? सावधान रहते हैं न? जब बाघ की बात आए, तब हमें उससे भय नहीं रखना हो, फिर भी उससे भय लगता है न? उसी तरह जब विषय की बात आए तो भय लगना चाहिए। जहाँ पर भय लगे, वहाँ पर क्या मज़े से खाना खाते हैं? नहीं। अत: जहाँ पर भय हो, वहाँ मज़ा नहीं होता। जगत् के लोग इस विषय को भयसहित भोगते होंगे? नहीं। लोग तो यह मज़े से भोगते हैं। भय होता है, वहाँ भोगवटा (मजा) है ही नहीं।

विषय का तो ज्ञानी पुरुष को सपने में भी विचार नहीं आता। वह तो पाशवी विद्या है। मनुष्य में खुली पाशवता कहनी हो तो वह इतनी ही है। मनुष्यपन तो मोक्ष के लिए ही होना चाहिए।

अनंत जन्मों तक कमाई करे, तब जाकर उच्च गोत्र, उच्च कुल में जन्म होता है। लेकिन फिर लक्ष्मी और विषय के पीछे अनंत जन्मों की कमाई खो देता है!

विषयों से तो भगवान भी डरे थे। वीतराग किसी भी चीज़ से नहीं डरते थे, लेकिन सिर्फ विषय से ही डरते थे। डरते थे यानी कैसा, कि जब साँप आता है, तब हर एक व्यक्ति पैर ऊपर ले लेता है या नहीं ले लेता!

**प्रश्नकर्ता :** ले लेता है।

**दादाश्री :** उसमें, खुद का हित नहीं है, ऐसा जानता है इसलिए ले लेता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** उसी तरह वीतराग भी इतना समझ गए कि इसमें हित नहीं है, यह तत्काल इफेक्टिव (असरदार) है, इसलिए यहाँ पर इस बारूदखाने से बहुत दूर रहने जैसा है। इतना डर तो रखना चाहिए न? विषयों में निडर हो ही नहीं सकते। भगवान महावीर भी विषयों से डरा करते थे और हम भी डरते हैं। विषयों में निडरता अर्थात् लापरवाही। इस तरह विषय में लापरवाह नहीं हो जाना चाहिए। पुलिस वाला पकड़कर करवाए, उसके जैसा होना चाहिए। यहाँ पर विषयों का साइन्स समझ लेना है। यह प्रत्यक्ष ज़हर है, ऐसा ज्ञान हाज़िर रहना चाहिए।

## ( सूत्र-20 )

**‘विषय वह विष नहीं है, पर विषय में निडरता वही विष है। इसलिए विषय से डरो।’**

‘विषय विष नहीं है’ सिर्फ ऐसा कहा जाए तो कितने ही त्यागियों के साथ मतभेद हो जाएगा कि ‘आप ऐसा कहते हैं?’ नहीं, मैं विषय को विष कहना ही नहीं चाहता। मैं विषय में निडरता को विष कहता हूँ। आप विषयों को विष कहते हैं, वह मैं कबूल नहीं करता। जो अविवाहित है और यदि वह ब्रह्मचारी की तरह रहना चाहता हो तो मैं बहुत खुश हूँ। यदि कोई विवाहित हो तो उसे क्या ऐसा कहेंगे कि पत्नी को छोड़कर भाग जा तू? फिर भी यदि वह पत्नी को छोड़कर भाग जाए और उसका मोक्ष हो जाए, क्या ऐसा कभी हो सकता है? ऐसा किसी के मानने में आता है क्या? तो फिर शादी क्यों की थी? शर्म नहीं आती? किसी को दग़ा नहीं देना चाहिए। इस दुनिया में किसी जीव को किंचित् मात्र भी दु:ख दिया होगा तो मोक्ष नहीं होगा। इसलिए हमने यह सरल रास्ता खोज निकाला। वर्ना ये सारे विवाहित लोग कहते हैं कि हम मोक्ष में जाने वाले हैं, वे ऐसा क्यों कह रहे हैं? उन्हें खुद को ऐसा लगा कि हम मोक्ष में जाने के लिए इस ओर जा रहे हैं। कितने मील की दूरी पर थे और अब सेन्ट्रल (स्टेशन) कितना पास आ गया, ऐसा आपको लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** नज़दीक है।

**दादाश्री :** बीवी-बच्चे साथ में हैं, बच्चों को पढ़ाता है, सब करता है। स्त्री मोक्ष में बाधा नहीं डालती। आपकी गलती से मोक्ष रुकता है। गलती

आपकी है, स्त्री की गलती नहीं है। स्त्री बाधक नहीं है, आपकी अज्ञानता बाधक है। यदि विषय विष होते तो भगवान महावीर तीर्थंकर ही नहीं बन पाते। भगवान महावीर की भी बेटी थी। अत: विषयों में निडरता, वह विष है। अब मुझे कुछ भी बाधक नहीं है, ऐसा होना, वही विष है।

**प्रश्नकर्ता :** निडरता, वह लापरवाही कहलाती है न?

**दादाश्री :** मैंने निडरता शब्द इसलिए दिया है ताकि विषय से डरे, सिर्फ लाचारी में ही विषय में पड़े। इसलिए विषय से डरो, ऐसा कहते हैं। क्योंकि भगवान भी डरते थे, बड़े-बड़े ज्ञानी भी डरते थे, तो आप ऐसे कैसे हो कि विषय से नहीं डरते? मुझे अब कुछ बाधक नहीं है, वही विष है। अत: विषय से डरो। विषय भोगो ज़रूर, लेकिन विषय से डरो। जैसे सुंदर भोजन मिला हो, रस-रोटी वगैरह, वह सब भोगो अवश्य, लेकिन डरते हुए भोगो। डरते हुए किसलिए कि ज़्यादा खाओगे तो तकलीफ हो जाएगी, इसलिए डरो।

एक साधु खोज लाओ कि जिसकी आज हम शादी करवाएँ और यदि एक महीना भी घर चला ले, तो वह सच्चा! अरे! यह तो तीसरे दिन ही भाग जाएगा। 'फलाना ले आओ, वह फलाना ले आओ, कहा कि भाग जाएगा। और ये (साधु) लोगों को परेशान करेंगे, 'अब आपका क्या होगा' कहेंगे, इसलिए मुझे ये भारी शब्द लिखने पड़े कि 'विषय विष नहीं हैं, जाओ घबराना मत'। 'मैं आपकी घबराहट निकालने आया हूँ। सहज भाव से विषय भोगो न! सहज होना चाहिए। यदि सहज भाव से विषय भोगे तो विषय विषय को ही भोगते हैं। यह तो, सहज भाव से भोगना आता नहीं न!

**प्रश्नकर्ता :** यानी विषय में जो पड़ता है, उसमें उसकी कोई हिम्मत काम नहीं करती, वह तो उसकी आसक्ति ही करवाती है।

**दादाश्री :** नहीं, हमें उसमें भी हर्ज नहीं है। निडरता में हर्ज है। यानी 'अब मुझे कुछ भी बाधक नहीं है, मैं भले ही कैसे भी विषय भोगूँ, फिर भी मुझे कुछ नहीं होगा।' ऐसी लापरवाही रहे तो, उस लापरवाही को हम निडरता कहते हैं। इन लोगों ने विषयों को एकांतिक रूप से 'विष' कहा है। इसलिए संसारी 'डिस्करेज' (हतोत्साहित) हो गए। तो फिर इन संसारियों को विष ही पीते रहना है न? क्या सिर्फ इन त्यागियों को ही विष नहीं पीना है? सिर्फ यह स्त्री-विषय ही विषय नहीं है। त्यागियों के भी कई विषय होते हैं और संसारियों के भी कई विषय होते हैं। लेकिन शास्त्रों में सिर्फ स्त्री-विषय को ही ऐसा ज़हर समान कहा गया है। इससे उन्होंने लोगों को डरा दिया है कि आप तो संसारी लोग हैं, विषय विष समान हैं, फिर भी करने तो पड़ते ही हैं न! इसलिए फिर वह उन्हें खटकता रहता है। यह झंझट निकाल देने योग्य है और यह जो खटकता रहता है, वह दु:ख कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** विषयों में निडरता, वह विष है। तो फिर जो निडरता उत्पन्न होती है, वह किसमें आती है?

**दादाश्री :** खुद निडरता रखे तो रहेगी। वह अहंकार करने लगे कि, 'मैं विषय में जीत गया, अब कोई हर्ज नहीं है।' वह निडरता कहलाती है। वह अहंकार कहलाता है। यदि निडर रहा तो वह विष हो गया। इस विषय में तो आखिर तक निडर नहीं होना है। पुलिस के पकड़े बिना तो कोई जेल में नहीं जाता न? पुलिस पकड़कर जेल में ले जाए, तभी जाओगे न? पुलिस द्वारा ले जाए बिना कोई जेल में जाए, तो नहीं समझ जाएँगे कि वह निडर हो गया है? अगर पुलिस वाला पकड़कर जेल में ले जाए तब उसका गुनाह नहीं है। इसी तरह यदि संयोग उसे विषय के गड्ढे में गिराएँ तो उसमें हर्ज नहीं है। यदि अब्रह्मचर्य की गाँठ विलय हो जाए तब तो सबकुछ चला जाएगा। यह सारा संसार उसी

पर टिका हुआ है। रूट कॉज़ (मूल कारण) यही है। इन लोगों के दु:ख दूर करने के लिए, लोगों के मन पर से बोझ हट जाए, इसीलिए ज्ञानी पुरुष ऐसा कहते हैं कि विषय, वह विष नहीं हैं। ताकि आपको ऐसा लगे कि चलो, इतनी तो शांति हुई!

विषय में कपट करना, अन्य कुछ भी करना, वह सब विष कहलाता है। वही मार डालता है और ऐसा होता हो तो निरा खेद, खेद और खेद होना चाहिए। निरंतर खेद किए बगैर अच्छा नहीं लगे तो समझना कि यह रोग चला जाएगा। वर्ना उखाड़ फेंकने की सत्ता तो खुद की है ही न! बिल्कुल सत्ता विहीन हो जाए, ऐसा कभी होता नहीं है। सत्ता तो, अंत तक 'केवलज्ञान' होने तक उसकी सत्ता रहती है। फिर उल्टा करने की या सीधा करने की, लेकिन सत्ता तो रहती है!

विषय को लेकर संसार में भारी नासमझी चल रही है। शास्त्र कहते हैं कि विषय वह विष है। कुछ लोग भी कहते हैं कि विषय वह विष है और वह मोक्ष में नहीं जाने देता। हम अकेले ही कहते हैं कि 'विषय वह विष नहीं है, पर विषय में निडरता वही विष है। इसलिए विषय से डरो।' निडर कब रहना चाहिए कि दो-तीन साँप आ रहे हों, उस समय आपके पैर नीचे हों और यदि आपको डर नहीं लगता हो तो पैर नीचे रखना परंतु डर लगता हो तो पैर ऊपर कर लेना। लेकिन यदि आपको डर नहीं लगता हो और पैर ऊपर ही नहीं लेते हो तो, वह पूर्ण ज्ञानी-केवलज्ञानी की निशानी है। लेकिन जब तक पूर्ण नहीं हुए, तब तक आप खुद ही डर के मारे पैर ऊपर कर लेते हैं इसलिए हम आपको विषयों में निडर रहने के लिए एक थर्मामीटर देते हैं। 'यदि साँप के सामने तू निडर रह सकता हो तो विषय में निडर रहना और वहाँ यदि डर लगता हो, पैर ऊपर कर लेता हो तो विषयों से भी डरते रहना।'

**जय सच्चिदानंद**

---

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### पटना

**7-8 फरवरी** (शुक्र-शनि) शाम 5 से 8 - **सत्संग** और **9 फरवरी** (रवि) शाम 3-30 से 7 - **ज्ञानविधि**
**स्थल :** श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल, कारगिल चौक, गांधी मैदान रोड, पटना. **संपर्क :** 7352723132

### पुणे में निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

**12 फरवरी** (बुध) शाम 5 से 7-30 - **सत्संग**
**13 फरवरी** (गुरु) सुबह 10 से 12-30 - **सत्संग** और शाम 5 से 7-30 - **सत्संग**
**14 फरवरी** (शुक्र) सुबह 10 से 12-45 - **श्री शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**
शाम 5 से 7-30 - **सत्संग**
**15 फरवरी** (शनि) सुबह 10 से 12-45 - **श्री कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**
शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
**16 फरवरी** (रवि) सुबह 9-30 से 12-45 - **श्री सीमंधर स्वामी मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**
**स्थल :** त्रिमंदिर, पुणे-बेंगलुरु हाईवे रोड, खेड़ शिवापुर के पास, वरवे बीके, पुणे, महाराष्ट्र.
**संपर्क :** 7218473468, 9425643302
**सूचना :** पांच दिवसीय प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में (टेंट में) रहने की और भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहेगी। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप के द्वारा दी जाएगी।

## अडालज : पूज्य नीरूमाँ का 81वें जन्मदिन का उत्सव : ता. 2 दिसम्बर 2024

## अहमदाबाद : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 6 से 8 दिसम्बर 2024

## सुरेन्द्रनगर : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 10 से 12 दिसम्बर 2024

## गांधीधाम : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 14 से 16 दिसम्बर 2024

जनवरी 2025
वर्ष-20 अंक-3
अखंड क्रमांक - 231

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/038/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

## अब मुझे कुछ बाधक नहीं है, वही विष है

विषय वह विष नहीं है, विषय में निडरता वह विष है। मैंने निडरता शब्द इसलिए दिया है ताकि विषय से डरे, सिर्फ लाचारी में ही विषय में पड़े। इसलिए विषय से डरो, ऐसा कहते हैं। क्योंकि भगवान भी डरते थे, बड़े-बड़े ज्ञानी भी डरते थे, तो आप ऐसे कैसे हो कि विषय से नहीं डरते ? मुझे अब कुछ बाधक नहीं है, ऐसा हुआ वही विष है। अत: विषय से डरो। विषय भोगो जरूर, लेकिन विषय से डरो। जैसे सुंदर भोजन मिला हो, रस-रोटी वगैरह, वह सब भोगो अवश्य, लेकिन डरते हुए भोगो। डरते हुए किसलिए कि ज्यादा खाओगे तो तकलीफ हो जाएगी, इसलिए डरो।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.